unacademy



सिंधु घाटी सभ्यता

(Indus Valley Civilization)



भूमिका

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

- The years old Indus Valley Civilization was an anonymous civilization till the second decade of the twentieth century i.e. people were unfamiliar with this civilization.
- Scholars believed that there was no civilization in India before Alexander's invasion (326 BC).

भूमिका

- बीसवीं सदी के तृतीय दशक में दो पुरातत्वशास्त्रियों-दयाराम साहनी तथा राखालदास बनर्जी ने हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के प्राचीन स्थलों से पुरावस्तुएँ प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि सिकंदर के आक्रमण के पूर्व भी एक सभ्यता थी, जो अपने समकालीन सभ्यताओं में सबसे विकसित थी।

- In the third decade of the twentieth century, two archaeologists, Dayaram Sahni and Rakhaldas Banerjee, obtained antiquities from the ancient sites of Harappa and Mohenjodaro, proved that even before the invasion of Alexander, there was a civilization, which was the most developed among its contemporary civilizations.

भूमिका

- कालांतर में सर जॉन मार्शल, माधव स्वरूप वत्स, के.एन. दीक्षित, अर्नेस्ट मैके, ऑरिल स्टेइन, अमलानंद घोष, जे. पी. जोशी आदि विद्वानों ने उत्खनन करके महत्त्वपूर्ण सामग्रियाँ प्राप्त की।
- उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इस पूरी सभ्यता को 'सिंधु घाटी सभ्यता', अथवा इसके मुख्य स्थल हड़प्पा के नाम पर 'हड़प्पा सभ्यता' कहा जाता है।

- Later on Sir John Marshall, Madhav Swaroop Vats, K.N. Dixit, Ernest McKay, Aurel Stein, Amalanand Ghosh, J. Scholars like P. Joshi excavated and obtained important materials.
- On the basis of the remains found from the excavation, this entire civilization is called 'Indus Valley Civilization', or 'Harappan Civilization' after its main site Harappa.

नामकरण

- सिंधु घाटी सभ्यता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक था। आरंभ में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से इस सभ्यता के प्रमाण मिले हैं अत: विद्वानों ने इसे सिंधु घाटी सभ्यता का नाम दिया, क्योंकि ये क्षेत्र सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में आते हैं, पर बाद में रोपड़, लोथल, कालीबंगा, बनावली, रंगपुर आदि क्षेत्रों में भी इस सभ्यता के अवशेष मिले जो सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र से बाहर थे।

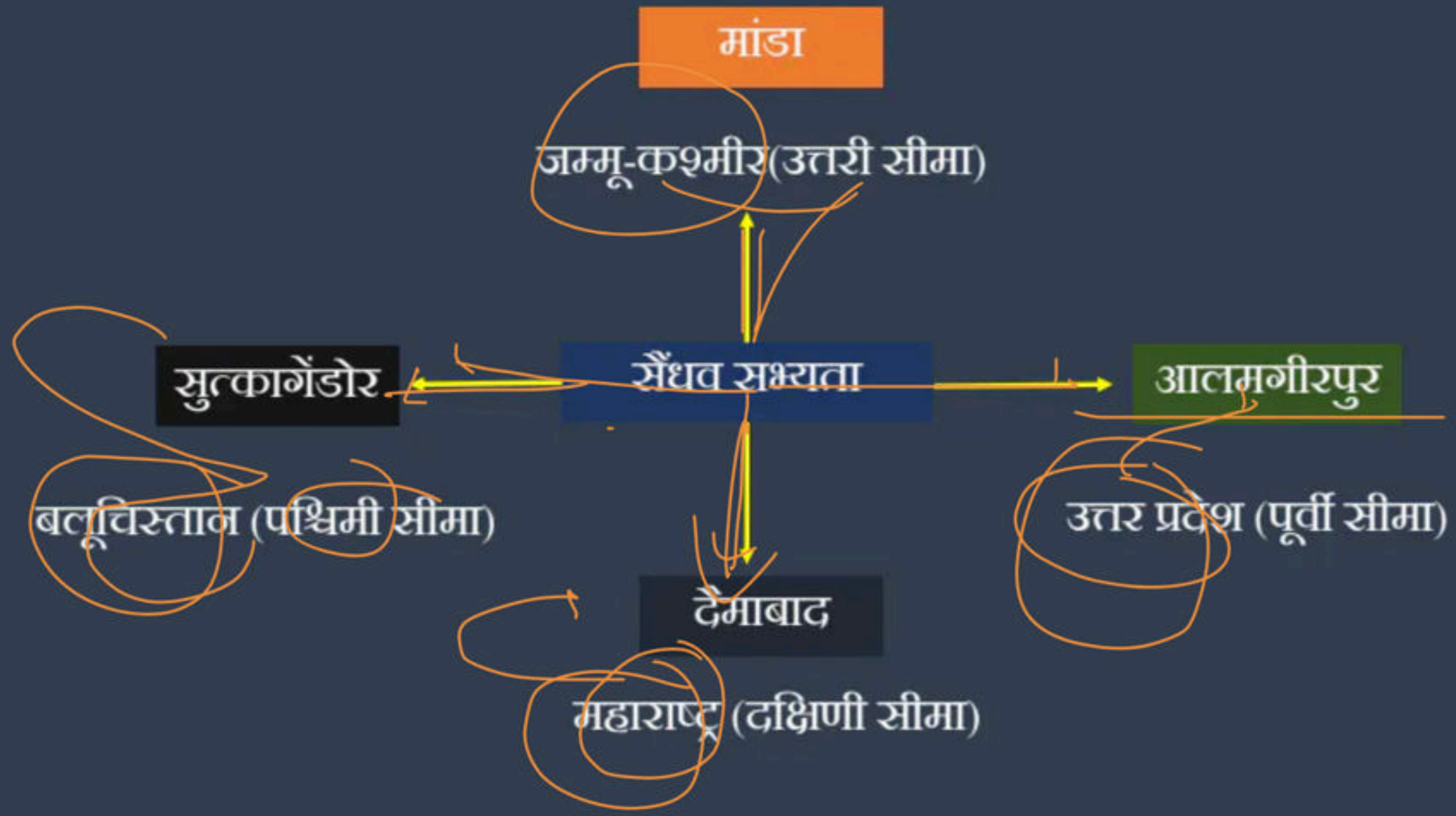
- The area of the Indus Valley Civilization was very wide. Initially, the evidence of this civilization has been found from the excavations of Harappa and Mohenjodaro, so scholars named it Indus Valley Civilization, because these areas come in the area of Indus and its tributaries, but later Ropar, Lothal, Kalibanga, Banawali Remains of this civilization were also found in areas like Rangpur, etc. which were outside the area of Indus and its tributaries.

नामकरण

- अत: इतिहासकार, इस सभ्यता का प्रमुख केंद्र हड़प्पा होने के कारण इस सभ्यता को 'हड़प्पा की सभ्यता' नाम देना उचित मानते हैं।

- Therefore, historians consider it appropriate to name this civilization 'Harappan Civilization' due to Harappa being the main center of this civilization.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार



सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- सिंधु घाटी सभ्यता कांस्ययुगीन सभ्यता थी, जिसका उद्भव ताम्रपाषाण काल में भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ था और इसका विस्तार भारत के अलावा पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में भी था।

- The Indus Valley Civilization was a Bronze Age civilization, which originated in the western region of India in the Chalcolithic period and spread to some areas of Pakistan and Afghanistan apart from India.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- सैंधव सभ्यता का भौगोलिक विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू) से लेकरदक्षिण में नर्मदा नदी के मुहाने तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक था।
- वह उत्तर से दक्षिण लगभग 1100 किमी. तक तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 1600 किमी. तक फैली हुई थी। अभी तक उत्खनन तथाअनुसंधान द्वारा करीब 2800 स्थल ज्ञात किये गए हैं।

- The geographical extent of the Indus civilization was from Manda (Jammu) in the north to the mouth of the Narmada river in the south and from Sutkagendor in the west to Alamgirpur (Meerut) in the east.
- It is about 1100 km from north to south. and from east to west about 1600 km. was extended. So far, about 2800 sites have been known by excavation and research.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- सिंधु घाटी सभ्यता अपने त्रिभुजाकार स्वरूप में थी जिसका क्षेत्रफललगभग 13 लाख वर्ग किमी. है।
- सर्वप्रथम चार्ल्स मैसन ने 1826 ई. में सैंधव सभ्यता का पता लगाया,जिसका सर्वप्रथम वर्णन उनके द्वारा 1842 में प्रकाशित पुस्तक में मिलता है।

- The Indus Valley Civilization was in its triangular form, whose area is about 13 lakh square km. Is.
- For the first time, Charles Mason traced the Indus civilization in 1826 AD, the first description of which is found in the book published by him in 1842.



unacademy

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- उसके बाद वर्ष 1921 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में पुरातत्त्वविद् दयाराम साहनी ने उत्खनन कर इसके प्रमुख नगर 'हड़प्पा' का पता लगाया।
- सर्वप्रथम हड़प्पा स्थल की खोज के कारण इसका नाम'हड़प्पा सभ्यता' रखा गया।

- After that in the year 1921, under the leadership of Sir John Marshall, the then Chairman of the Archaeological Survey of India, the archaeologist Dayaram Sahni excavated and discovered its main city 'Harappa'.
- Due to the discovery of the first Harappan site, it was named 'Harappan Civilization'.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- सर जॉन मार्शल के दिशानिर्देश में ही राखालदास बनर्जी द्वारा सिंधुघाटी सभ्यता के स्थल मोहनजोदड़ो की खोज 1922 में की गई।
- रेडियो कार्बन-14(C4) जैसी नवीन विश्लेषण पद्धति के द्वारा हड़प्पा सभ्यता का काल निर्धारण 2500 ई.पू. से 1750 ई.पू. माना गया है।

- Mohenjodaro, the site of the Indus Valley Civilization, was discovered in 1922 by Rakhaldas Banerjee under the guidance of Sir John Marshall.
- The Harappan civilization was dated 2500 BC by a new analysis method like Radio Carbon-14(C4). to 1750 BC It is assumed.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- यह सभ्यता 400-500 वर्षों तक विद्यमान रही तथा 2200 ई.पू. से 2000 ई.पू. के मध्य तक यह अपनी परिपक्व अवस्था में थी। नवीनशोध के अनुसार यह सभ्यता लगभग 8,000 साल पुरानी है।
- सिंधु घाटी सभ्यता के निर्माताओं के निर्धारण का महत्त्वपूर्ण स्रोत का उत्खनन से प्राप्त मानव कंकाल है। सबसे अधिक कंकाल मोहनजोदड़ोसे प्राप्त हुए हैं।

- This civilization existed for 400-500 years and dates back to 2200 BC. to 2000 BC By the middle of the year it was in its mature stage. According to new research, this civilization is about 8,000 years old.
- An important source of determination of the builders of the Indus Valley Civilization is the excavated human skeleton. Most of the skeletons have been found from Mohenjodaro.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- इनके परीक्षण से यह निर्धारित हुआ है कि सिंधु सभ्यता में चार प्रजातियाँ निवास करती थीं- भूमध्यसागरीय,प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड, अल्पाइन तथा मंगोलॉयड।
- सबसे ज्यादा भूमध्यसागरीय प्रजाति के लोग थे।

- From their examination it has been determined that four species lived in the Indus Civilization – Mediterranean, Proto-Australoid, Alpine and Mongoloid.
- Most were people of the Mediterranean race.

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- सिंधु घाटी सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी, जिसका ज्ञान इसके पुरातात्त्विक अवशेषों तथा अनुसंधानों से होता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता थी-
- पर्यावरण के अनुकूल इसका अद्भुत नगर नियोजन तथा जल निकास प्रणाली।
- सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। लगभग सभी नगर दो भागों में विभक्त थे :-



- The Indus Valley Civilization was an urban civilization, whose knowledge comes from its archaeological remains and research. Its biggest feature was-
- Its wonderful town planning and drainage system which is eco-friendly.
- The roads cut each other at right angles. Almost all the cities were divided into two parts:-

unacademy

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- प्रथम भाग में ऊँचे दुर्ग निर्मित थे। इनमें शासक वर्ग निवास करता था।
- दूसरे भाग में नगर या आवास क्षेत्र के साक्ष्य मिले हैं, जो अपेक्षाकृत बड़े थे। आमतौर पर यहाँ सामान्य नागरिक, व्यापारी,शिल्पकार, कारीगर और श्रमिक रहते थे।

- High forts were built in the first part. The ruling class resided in them.
- In the second part there is evidence of towns or housing areas, which were relatively large. Commonly citizens, merchants, craftsmen, artisans and laborers lived here.





सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- सड़कों के किनारे की नालियाँ ऊपर से ढकी होती थीं। घरों का गंदापानी इन्हीं नालियों से होता हुआ नगर की मुख्य नाली में गिरता था।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा कालीबंगा की नगर योजना लगभग एकसमानथी। कालीबंगा व रंगपुर को छोड़कर सभी में पकी हुई ईटों का प्रयोग हुआ है।

- The drains along the roads were covered from above. The dirty water of the houses used to fall into the main drain of the city through these drains.
- The town plans of Harappa, Mohenjodaro and Kalibanga were almost identical. Baked bricks have been used in all except Kalibanga and Rangpur.

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- आमतौर पर प्रत्येक घर में एक आंगन, एक रसोईघर तथा एक स्नानागार होता था। अधिकांश घरों में कुओं के अवशेष भी मिले हैं।
- बड़े-बड़े भवन हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो की विशेषता बतलाते हैं।हड़प्पाकालीन नगरों के चारों ओर प्राचीर बनाकर किलेबंदी की गईथी, जिसका उद्देश्य नगर को चोर, लुटेरों एवं पशु दस्युओं से बचाना था।



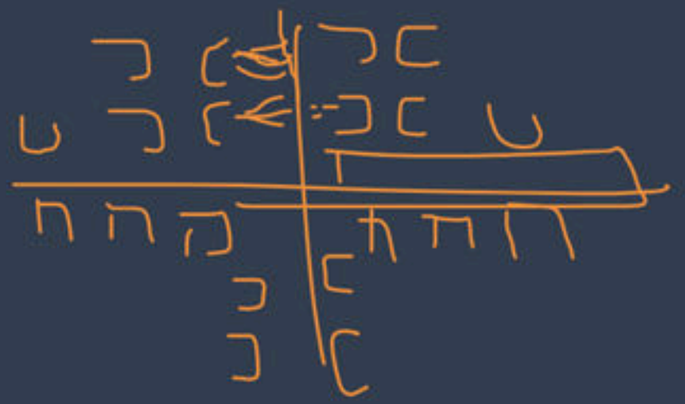
- Usually each house had a courtyard, a kitchen and a bathroom. The remains of wells have also been found in most of the houses.
- Large buildings tell the specialty of Harappa and Mohenjodaro. Harappan cities were fortified by making ramparts, whose purpose was to protect the city from thieves, robbers and cattle bandits. विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार सैंधव सभ्यता का अद्भुत निर्माणहै, जबकि अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।
- घरों के दरवाजे एवं खिड़कियाँ मुख्य सड़क पर न खुलकर गलियों लमें खुलती थीं, लेकिन लोथल इसका अपवाद है।



- The Great Bath of Mohenjodaro is a wonderful construction of the Indus Civilization, while the Annagar is the largest building of the Indus Civilization.
- The doors and windows of the houses did not open openly on the main road in the streets, but Lothal is an exception.



सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- इसके दरवाज़े एवं खिड़कियाँ मुख्य सड़कों की ओर खुलती थीं। यद्यपि मकान बनाने में कई प्रकार की ईंटों का प्रयोग होता था, जिसमें 4:2:1 (लंबाई, चौड़ाई तथा मोटाई का अनुपात) के आकार की ईंटें ज़्यादा प्रचलित थी।

- Its doors and windows opened towards the main roads. Although many types of bricks were used in building houses, the size of 4:2:1 (ratio of length, width and thickness) was more prevalent.

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल

- सिंधु घाटी सभ्यता के कुछ प्रमुख स्थल निम्नलिखित हैं :-

- Some of the major sites of the Indus Valley Civilization are as follows:-

हड़प्पा

- सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों की खोज सर्वप्रथम 1921 ई. मेंहड़प्पा में की गई। हड़प्पा वर्तमान में रावी नदी के बायें तट पर पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मोंटगोमरी जिले में स्थित है।
- स्टुअर्ट पिग्गट ने इसे 'अर्द्ध-औद्योगिक नगर' कहा है। यहाँ के निवासियों का एक बड़ा भाग व्यापार, तकनीकी उत्पाद और धर्म के कार्यों में संलग्न था।

- The remains of the Indus Valley Civilization were first discovered in 1921 AD in Harappa. Harappa is currently located in Montgomery district of Punjab province of Pakistan on the left bank of Ravi river.
- Stuart Piggett has called it a 'semi-industrial city'. A large part of the inhabitants here were engaged in trade, technical products and religious activities.

unacademy

हड़प्पा

- उन्होंने हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को 'एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानी' कहा था।
- नगर की रक्षा के लिये पश्चिम की ओर एक दुर्ग का निर्माण किया गया था। यह दुर्ग उत्तर से दक्षिण की ओर 415 मीटर लंबा तथा पूर्व से पश्चिम की ओर 195 मीटर चौड़ा है। जिस टीले पर यह दुर्ग बना है उसे व्हीलर ने 'माउंड ए-बी' (Mound A-B) की संज्ञाप्रदान की है।

- He called Harappa and Mohenjodaro the 'twin capitals of a vast empire'.
- A fort was built on the west side to protect the city. This fort is 415 meters long from north to south and 195 meters wide from east to west. Wheeler has given the name of 'Mound A-B' to the mound on which this fort is built.

मोहनजोदड़ो

- इसका सिंधी भाषा में अर्थ 'मृतकों का टीला' होता है। यह सिंध(पाकिस्तान) के लरकाना जिले में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।
- सर्वप्रथम इसकी खोज राखालदास बनर्जी ने 1922 ई. में की थी।मोहनजोदड़ो की शासन व्यवस्था राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक थी।

- It means 'mound of the dead' in Sindhi language. It is situated on the banks of the Indus river in the Larkana district of Sindh (Pakistan).
- It was first discovered by Rakhaldas Banerjee in 1922 AD. The governance system of Mohenjodaro was democratic rather than monarchical.

unacademy

मोहनजोदड़ो

- वृहद् स्नानागार, मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल है। इसके केंद्रीय खुले प्रांगण के बीच जलकुंड या जलाशय बना है।
- तांबे तथा टिन को मिलाकर हड़प्पावासी काँसे का निर्माण करते थे। मोहनजोदड़ो से काँसे की एक नर्तकी की मूर्ति पायी गई है, जो द्रवीमोम विधि (Lost wax method) से बनी है।

- The Great Bath is the most important public place of Mohenjodaro. There is a water tank or reservoir in the middle of its central open courtyard.
- The Harappans made bronze by mixing copper and tin. A bronze dancer's idol has been found from Mohenjodaro, which is made by the Lost wax method.



चन्हूदड़ो

- यह सैंधव नगर मोहनजोदड़ो से 130 किमी. दक्षिण-पूर्व सिंध प्रांत(पाकिस्तान) में स्थित है। इसकी सर्वप्रथम खोज 1934 ई. में एन.गोपाल मजूमदार ने की थी तथा 1935 ई. में अर्नेस्ट मैके द्वारायहाँ उत्खनन करवाया गया।
- चन्हूदड़ो एकमात्र पुरास्थल है, जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।

- It is 130 km from Saindhav Nagar Mohenjodaro. Located in southeast Sindh province (Pakistan). It was first discovered in 1934 AD by N. Gopal Majumdar and excavated here by Ernest Mackay in 1935 AD.
- Chanhudaro is the only site from where curved bricks have been found.

unacademy

चन्हूदड़ो

- चन्हूदड़ो में किसी दुर्ग का अस्तित्व नहीं मिला है। चन्हूदड़ो सेपूर्वोत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति (झूकर-झाँगर) के अवशेष मिले हैं।



- ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक औद्योगिक केंद्र था जहाँ मणिकारी,मुहर बनाने, भार-माप के बटखरे बनाने का काम होता था। अर्नेस्ट मैकेने यहाँ से मनका बनाने का कारखाना तथा भट्टी की खोज की है।

- No fort has been found in Chanhudaro. Remnants of North East Harappan culture (Jhukar-Jhangar) have been found from Chanhudaro.

- It appears that it was an industrial center where the work of manikari, seal-making, weight-measures and weighing scales was done. Ernest McKayne discovered a bead factory and furnace from here.

लोथल

- यह गुजरात के अहमदाबाद जिले के सरगवाला ग्राम के समीप दक्षिणमें भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज सर्वप्रथम डॉ. एस.आर. राव ने 1955 ई. में की थी।
- यह स्थल एक प्रमुख बंदरगाह था, जो पश्चिमी एशिया से व्यापारका प्रमुख स्थल था।
- लोथल में नगर को दो भागों में न बाँटकर एक ही रक्षा प्राचीर से पूरे नगर को दुर्गीकृत किया गया था।

- It is situated on the bank of river Bhogwa in the south near Sargwala village of Ahmedabad district of Gujarat. It was first discovered by Dr. S.R. Rao did it in 1955 AD.
- This site was a major port, which was a major place of trade with West Asia.
- In Lothal, the whole city was fortified with a single defense wall instead of dividing the city into two parts.

राखीगढ़ी

- हरियाणा के हिसार जिले में स्थित प्रमुख पुरातात्विक स्थल।
- यहाँ से अन्नागार एवं रक्षा प्राचीर के साक्ष्य मिले हैं।
- मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत-स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

- Major archaeological site located in Hisar district of Haryana.
- Evidence of granaries and defense ramparts have been found from here.
- In May 2012, the 'Global Heritage Fund' included it in the list of ten such 'heritage sites' in Asia that are at risk of destruction.



unacademy

कालीबंगा

- यह राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के बायें तट पर है।कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ 'काले रंग की चूड़ियाँ' हैं।
- इसकी खोज 1951 में अमलानंद घोष द्वारा की गई तथा 1961 ई. मेंबी.बी. लाल और बी.के. थापर के निर्देशन में व्यापक खुदाई की गई।

- It is on the left bank of the Ghaggar River in the Ganganagar district of Rajasthan. The literal meaning of Kalibanga is 'Bangles of Black Color'.
- It was discovered in 1951 by Amalanand Ghosh and in 1961 AD by B.B. Lal and B.K. Extensive excavations were carried out under Thapar's direction.

कालीबंगा

- यहाँ से जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है।
- यहाँ के भवनों का निर्माण कच्ची ईंटों द्वारा हुआ था; यहाँ से अलंकृतईंटों के साक्ष्य भी मिले हैं।
- कालीबंगा में शवों के अंत्येष्टि संस्कार हेतु तीन विधियों- पूर्णसमाधीकरण, आंशिक समाधीकरण एवं दाह-संस्कार के प्रमाण मिले हैं।

- Evidence of plowing field has been found from here.
- The buildings here were made of mud bricks; Evidence of ornate bricks has also been found from here.
- Evidence of three methods for cremation of dead bodies - full samadhikaran, partial samadhikaran and cremation have been found in Kalibanga.

बनावली

- हरियाणा के फतेहाबाद जिले में स्थित इस पुरास्थल की खोज 1973ई. में आर.एस. बिष्ट ने की थी।
- इस स्थल से कालीबंगा की तरह हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पाकालीन दोनों संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ जल निकास प्रणाली का अभाव था।
- यहाँ से मिट्टी का बना हल मिला है।
- बनावली से अधिक मात्रा में जौ मिला है।

was discovered in 1973 AD. In RS Bisht did it.

- Like Kalibanga, the remains of both pre-Harappan and Harappan cultures have been found from this site.
- There was a lack of drainage system here.
- A plow made of clay has been found from here.
- Barley has been found in excess quantity from Banawali.

धौलावीरा

- यह गुजरात के कच्छ जिले के भचाऊ तालुका में स्थित है। इसकी खोज1967 ई. में जे.पी.जोशी ने की थी।
- यहाँ से प्राप्त होने वाली सिंधु लिपि के 10 बड़े चिह्नों से निर्मित शिलालेख महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। धौलावीरा के निवासी जल संरक्षण की तकनीक से परिचित थे।

- It is located in Bhachau taluka of Kutch district of Gujarat. It was discovered by JP Joshi in 1967 AD.
- The inscriptions made from 10 big signs of the Indus script to be received from here are an important achievement. The residents of Dholavira were familiar with the techniques of water conservation.

धौलावीरा

- नगर तीन भागों में विभाजित था- दुर्गाभाग, मध्यम नगर तथा निचला नगर।
- धौलावीरा से हड़प्पा सभ्यता का एकमात्र स्टेडियम (खेल का मैदान) मिला है।

- The city was divided into three parts – Durgabhaga, Madhyam Nagar and Lower Nagar.
- The only stadium (playground) of Harappan civilization has been found from Dholavira.

unacademy

सैंधव स्थलों से प्राप्त अवशेष एवं वस्तुएँ	
स्थल	प्राप्त अवशेष एवं वस्तुएँ
हड़प्पा	कब्रिस्तान आर-37, शंखाधान पेटिका, शंख का बना बैल, पीतल की इक्का गाड़ी, स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा (उर्वरता की देवी), गेहूँ व जौ के दाने, अन्नागार, स्वास्तिक एवं चक्र के साक्ष्य, तांबे का पैमाना इत्यादि।
मोहनजोदड़ो	वृहद् स्नानागार, मातृदेवी की मूर्ति, काँसे की नर्तकी की मूर्ति, राज मुद्रांक, मुद्रा पर अंकित पशुपति नाथ की मूर्ति, सूती कपड़ा, हाथी का कपाल खंड, घोड़े के दाँत एवं गीली मिट्टी के दीये के साक्ष्य, गले हुए तांबे के ढेर, सीपी की बनी हुई पटरी, कुंभकारों के 6 'भट्टों के अवशेष', तथा मिट्टी का तराजू, सबसे बड़ी ईंट का साक्ष्य आदि।
चन्हूदड़ो	अलंकृत हाथी, वक्राकार ईंटें, कंघा, लिपस्टिक, चार पहियों वाली गाड़ी, अलंकृत हाथी, मनके इत्यादि।
कालीबंगा	आयताकार 7 अग्नि वेदिकाएँ, जुते हुए खेत के साक्ष्य, काँच व मिट्टी की चूड़ियाँ, सिलबट्टा, सूती कपड़े की छाप, माणिक्य एवं मिट्टी के मनके, बेलनाकार मुहरें, मिट्टी के खिलौने तथा प्रतीकात्मक समाधियाँ आदि।
लोथल	बंदरगाह, धान (चावल) और बाजरे का साक्ष्य, फारस की मुहर, तीन युगल समाधियाँ, धान की भूसी, मनका उद्योग के साक्ष्य, तांबे का कुत्ता, छोटा दिशा मापक यंत्र इत्यादि।
सुरकोटदा	घोड़े की अस्थियाँ एवं एक विशेष प्रकार का कब्रगाह आदि।
बनावली	हल की आकृति वाले मिट्टी के खिलौने, जौ, तांबे के बाणाग्र आदि।

स्थल	नदियों के नाम	उत्खनन का वर्ष	उत्खननकर्ता	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी (1926–27 से 1933–34 तक माधोस्वरूप वत्स के निर्देशन में)	पाकिस्तान का मोंटगोमरी जिला
मोहनजोदड़ो	सिंधु	1922	राखालदास बनर्जी	सिंध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
चन्हूदड़ो	सिंधु	1935	अर्नेस्ट मैके	सिंध प्रांत (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला
कोटदीजी	सिंधु	1955 एवं 1957	फजल अहमद खाँ	पाकिस्तान का सिंध प्रांत
रंगपुर	भादर	1954	एस.आर. राव	गुजरात का अहमदाबाद जिला
रोपड़	सतलज	1953 से 56 तक	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ जिला
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	एस.आर. राव	गुजरात का अहमदाबाद जिला
आलमगीरपुर	हिण्डन	1958	खोज-यज्ञ दत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला
सुत्कागेंडोर	दाश्क	1927	खोज-ऑरेल स्टेइन	पाकिस्तान के मकरान में समुद्रतट के किनारे
बनावली	सरस्वती	1973–74	आर.एस. बिष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला
धौलावीरा		1967–68	खोज-जे.पी. जोशी	गुजरात का कच्छ जिला
		1990–91	आर.एस. बिष्ट	

हड़प्पाई लिपि

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

- The years old Indus Valley Civilization was an anonymous civilization till the second decade of the twentieth century i.e. people were unfamiliar with this civilization.
- Scholars believed that there was no civilization in India before Alexander's invasion (326 BC).

unacademy

हड़प्पाई लिपि

- इसकी लिपि पिक्टोग्राफ अर्थात् चित्रात्मक थी जो दाई ओर से बाई ओरलिखी जाती थी। इस पद्धति को बूस्ट्रोफेडन (Boustrophedon) कहा गया है। सबसे ज्यादा चित्र 'U' आकार तथा 'मछली' के प्राप्त हुए हैं।

- Its script was pictograph i.e. pictographic which was written from right to left. This method is called Boustrophedon. Most of the pictures have been received of 'U' shape and 'Fish'.



unacademy

सामाजिक जीवन

- सिंधु घाटी से प्राप्त अवशेषों के आधार पर उस काल के सामाजिक जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है। समाज की इकाई परंपरागत तौर पर परिवार थी।
- मातृदेवी की पूजा तथा मुहरों पर अंकित चित्र से यह पता चलता है कि हड़प्पा समाज संभवतः मातृसत्तात्मक था।

- The social life of that period can be estimated on the basis of the remains found from the Indus Valley. The unit of society was traditionally the family.
- The worship of Mother Goddess and the images inscribed on the seals suggest that the Harappan society was probably matriarchal.

unacademy

सामाजिक जीवन

- समाज में विद्वान (पुरोहित), योद्धा, व्यापारी और श्रमिक वर्ग की मौजूदगी थी। आवासों की संरचना समाज की आर्थिक विषमता को दर्शाती है।
- हड़प्पावासी साज-सज्जा पर विशेष ध्यान देते थे। स्त्री एवं पुरुष दोनोंआभूषण धारण करते थे। यहाँ से प्रसाधन मंजूषा मिली है।

- There was presence of scholars (priests), warriors, merchants and working class in the society. The structure of houses reflects the economic inequality of the society.
- The Harappans paid special attention to decoration. Both men and women used to wear ornaments. The toiletry box has been found from here.

सामाजिक जीवन

- चन्हूदड़ो से लिपस्टिक के साक्ष्य मिले हैं।
- सिंधु सभ्यता के लोग सूती व ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्रों का प्रयोगकरते थे।
- इस सभ्यता के लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजनकरते थे।
- यहाँ के लोग मनोरंजन के लिये चौपड़ और पासा खेलते थे।

- Evidence of lipstick has been found from Chanhudaro.
- The people of Indus civilization used both cotton and woolen clothes.
- The people of this civilization used to eat both vegetarian and non-vegetarian food.
- The people here used to play dice and dice for entertainment.

unacademy

सामाजिक जीवन

- अंत्येष्टि में पूर्ण समाधीकरण सर्वाधिक प्रचलित था, जबकि आंशिकसमाधीकरण एवं दाह संस्कार का भी चलन था।
- यहाँ के लोग गणित, धातु निर्माण, माप-तौल प्रणाली, ग्रह-नक्षत्र,मौसम विज्ञान इत्यादि की जानकारी रखते थे।

- Full burial was most prevalent in funerals, while partial burial and cremation were also practiced.
- The people here used to have knowledge of mathematics, metal making, measurement-weight system, planet-constellation, meteorology, etc.

सामाजिक जीवन

- सैंधव सभ्यता के लोग युद्धप्रिय कम, शांतिप्रिय ज्यादा थे।
- श्रमिकों की स्थिति का आकलन कर व्हीलर ने दास प्रथा को स्वीकार किया है।

- The people of Indus civilization were less war-loving, more peace-loving.
- After assessing the condition of the workers, Wheeler accepted slavery.

राजनीतिक जीवन

- हड़प्पाइयों के राजनीतिक संगठन का कोई स्पष्ट आभास नहीं है। चूँकि, हड़प्पावासी वाणिज्य-व्यापार की ओर अधिक आकर्षित थे, इसलिये ऐसा माना जाता है कि शासन व्यवस्था में भी वणिक अथवा व्यापारी वर्ग की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी।

- There is no clear indication of the political organization of the Harappans. Since the Harappans were more attracted towards commerce, it is believed that the role of merchant or merchant class was also important in the governance system.

unacademy

राजनीतिक जीवन

- हंटर के अनुसार, "मोहनजोदड़ो का शासन राजतंत्रात्मक न होकरजनतंत्रात्मक था।"
- व्हीलर के अनुसार, "सिंधु सभ्यता के लोगों का शासन मध्यवर्गीय जनतंत्रात्मक शासन था और उसमें धर्म की महत्ता थी।"

- According to Hunter, "The rule of Mohenjodaro was democratic rather than monarchical."
- According to Wheeler, "The rule of the people of the Indus Civilization was middle-class democratic rule and religion was important in it."

unacademy

आर्थिक जीवन

- सैंधव सभ्यता की उन्नति का प्रमुख कारण उन्नत कृषि तथा व्यापार था।
- अतः इस काल की अर्थव्यवस्था ही सिंचित कृषि अधिशेष, पशुपालन, विभिन्न दस्तकारियों में दक्षता और समृद्ध आंतरिक और विदेश व्यापार पर आधारित थी।

- The main reason for the progress of the Indus civilization was advanced agriculture and trade.
- Therefore, the economy of this period was based on irrigated agricultural surplus, animal husbandry, proficiency in various handicrafts and prosperous internal and foreign trade.

आर्थिक जीवन

- सैंधव सभ्यता का व्यापार केवल सिंधु क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था अपितु मिन, मेसोपोटामिया औरमध्य एशिया से भी व्यापार होता था।
- सैंधव सभ्यता के प्रमुख बंदरगाह- लोथल, रंगपुर, सुरकोटदा,प्रभासपाटन आदि थे।
- हड़प्पा सभ्यता में माप की दशमलव प्रणाली तथा माप-तौल की इकाई 16 के गुणक में होती थीं।

- The trade of Indus civilization was not limited only to the Indus region, but trade was also done with Min, Mesopotamia and Central Asia.
- The major ports of the Indus civilization were- Lothal, Rangpur, Surkotada, Prabhaspatan etc.
- In the Harappan civilization, the decimal system of measurement and the unit of measure were in multiples of 16.

आर्थिक जीवन

- इस सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, मटर, तिल, सरसों, कपास आदिकी खेती किया करते थे। सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोगों को दिया जाता है।
- यूनानियों ने इसे 'सिंडन' (सिडोन) नाम दिया है। ये लोग तरबूज, खरबूज़, नारियल, अनार, नींबू, केला जैसे फलों से भी परिचित थे। यहाँ के प्रमुख खाद्यान्न गेहूँ तथा जौ थे।

- The people of this civilization used to cultivate wheat, barley, rye, peas, sesame, mustard, cotton etc. The people of Indus Civilization are credited with producing the first cotton.
- The Greeks named it 'Sindon' (Sidon). These people were also familiar with fruits like watermelon, melon, coconut, pomegranate, lemon, banana. The main food grains here were wheat and barley.

unacademy

आर्थिक जीवन

- कृषि कार्य हेतु प्रस्तर (पत्थर) एवं काँसे के औजारों का प्रयोगकिया जाता था। इस सभ्यता में फावड़ा या फाल नहीं मिला हैसंभवतः ये लोग लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे।
- सैंधव नगरों में कृषि पदार्थों की आपूर्ति ग्रामीण क्षेत्रों से होती थी,इसलिये अन्नागार नदियों के किनारे बनाए गए थे।

- Stone and bronze tools were used for agricultural work. No shovel or fall has been found in this civilization. Probably these people used wooden plows.
- In the Sandhav towns, the supply of agricultural commodities came from the rural areas, so granaries were built on the banks of the rivers.

unacademy

आर्थिक जीवन

- कृषि उन्नति के साथ पशुपालन का भी विकास हुआ था। कृषि कार्यों एवं व्यापार तथा परिवहन में पशुओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।
- पशुओं में- कूबड़ वाले बैल, भेड़, बकरी, हाथी, भैंस, गाय, गधे, सुअर व कुत्ते आदि के होने का अनुमान है।
- गुजरात के निवासी हाथी पालते थे।

- With the advancement of agriculture, animal husbandry also developed. Animals played an important role in agriculture, trade and transport.
- Among the animals - humped bulls, sheep, goats, elephants, buffaloes, cows, donkeys, pigs and dogs are estimated to be there.
- The residents of Gujarat used to keep elephants.

unacademy

धार्मिक जीवन

- सैंधव निवासी ईश्वर की पूजा मानव, वृक्ष एवं पशु तीनों रूपों में करते थे। इस सभ्यता के लोग भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र आदि में विश्वास करते थे।
- ताबीजों के आधार पर जादू-टोने में विश्वास करने तथा कुछ जगहों की मुहरों (जैसे-चन्हूदड़ो में) पर बलि प्रथा के दृश्य अंकित होने के आधार पर बलि प्रथा का भी अनुमान लगाया जाता है।

- Inhabitants worshiped God in all the three forms of human, tree and animal. The people of this civilization believed in ghosts, ghosts, tantra-mantras etc.
- On the basis of amulets, the belief in witchcraft and some places (such as in Chanhudaro) are inscribed with scenes of sacrificial rituals.

unacademy

धार्मिक जीवन

- ये लोग मातृदेवी, रुद्र देवता (पशुपति नाथ), लिंग-योनि आदि की पूजा करते थे। इसके अलावा सैंधववासी वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी इत्यादि की भी पूजा करते थे।
- विशाल स्नानागार का प्रयोग संभवतः धार्मिक अनुष्ठान तथा सूर्य पूजा में होता होगा।

- These people worshiped Mother Goddess, Rudra Devta (Pashupati Nath), Linga-Yoni etc. Apart from this, the people of Sandhav also worshiped trees, animals, snakes, birds etc.
- The huge bath might have been used for religious rituals and sun worship.

unacademy

धार्मिक जीवन

- कालीबंगा से प्राप्त अग्निकुंड के साक्ष्य के आधार पर कहा जा सकता है कि अग्नि तथा स्वास्तिक आदि की पूजा की जाती थी। स्वास्तिक और चक्र सूर्य पूजा के प्रतीक थे।
- सैंधववासी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, इसलिये मृत्यु के बाद दाह संस्कार के तीन तरीके प्रचलित थे- पूर्ण शवाधान, आंशिक शवाधान एवं कलश शवाधान।

- On the basis of the evidence of the fire pit obtained from Kalibanga, it can be said that the worship of fire and swastika etc. was done. The swastika and the chakra were symbols of sun worship.
- The Saindhavas believed in reincarnation, so three methods of cremation were prevalent after death - complete cremation, partial cremation and Kalash cremation.

धार्मिक जीवन

- इनके धार्मिक दृष्टिकोण का आधार इहलौकिक तथा व्यावहारिक अधिकथा। मूर्ति पूजा का आरंभ संभवतः सैंधव सभ्यता से ही होता है।
- हड़प्पा से प्राप्त एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है।

- The basis of his religious outlook was more secular and practical. Idol worship probably begins with the Indus civilization itself.
- A plant from the womb of a Harappan terracotta is shown, symbolizing the goddess of fertility.

unacademy

सिंधु सभ्यता के पतन के कारण

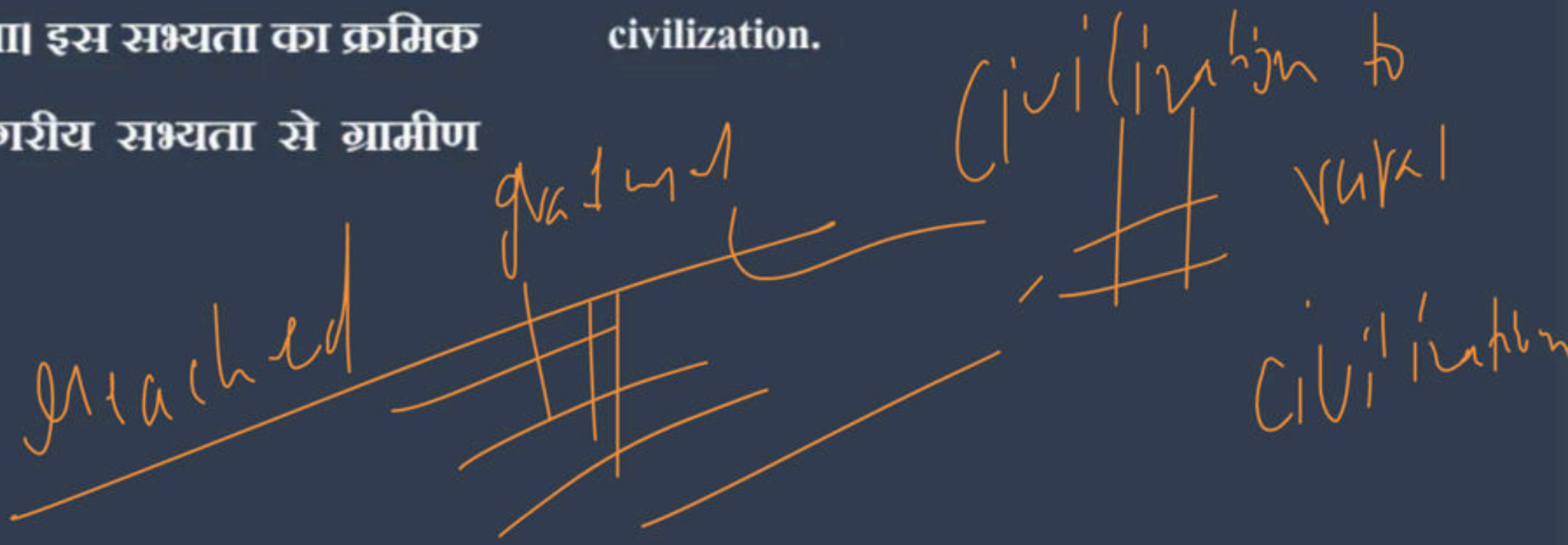
- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति की तरह ही इसके पतन के लिये कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं था। इस सभ्यता के प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से यह पता चलता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रही।

- Like the origin of the Harappan civilization, no single cause was responsible for its decline. The study of the ancient remains of this civilization shows that it was in decline in its last days.

सिंधु सभ्यता के पतन के कारण

- अंततः द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया। इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुँच गयी।

- Finally the second millennium BC. In the middle of this civilization was completely destroyed. There was a gradual decline of this civilization and it reached from urban civilization to rural civilization.



पतन से संबंधित विद्वानों के मत

विद्वान	पतन के कारण
गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर	बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण
जॉन मार्शल अर्नेस्ट मैके एवं एस.आर. राव	बाढ़
ऑरिल स्टेइन, अमलानंद घोष |	जलवायु परिवर्तन
एम.आर. साहनी	भूतात्त्विक परिवर्तन/जलप्लावन
जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता
के.यू.आर. कनेडी	प्राकृतिक आपदा (मलेरिया, महामारी)

unacademy

सैंधव सभ्यता की देन

- सैंधव सभ्यता में प्रचलित अनेक चीजें ऐतिहासिक काल में भी निरंतर रहीं।
- इसके कुछ प्रमुख उदाहरण हैं- दशमलव पद्धति पर आधारित माप-तौल प्रणाली, नगर नियोजन, सड़कें एवं नालियों की व्यवस्था, बहुदेववाद का प्रचलन, मातृदेवी की पूजा, प्रकृति पूजा,।

- Many things prevalent in the Indus civilization remained constant even in the historical period.
- Some of the prominent examples of this are- measurement-weight system based on decimal system, town planning, arrangement of roads and drains, practice of polytheism, worship of mother goddess, nature worship, etc.

unacademy

सैंधव सभ्यता की देन

- शिव पूजा, लिंग एवं योनि पूजा, योग का प्रचलन, जल का धार्मिक महत्त्व, स्वास्तिक, चक्र आदि प्रतीक के रूप में ताबीज, तंत्र-मंत्र का प्रयोग, आभूषणों का प्रयोग, बहुफसली कृषि व्यवस्था, अग्नि पूजा या यज्ञ, मुहरों का उपयोग, इक्कागाड़ी एवं बैलगाड़ी, आंतरिक एवं बाह्यव्यापार आदि।

- Shiva worship, linga and yoni worship, practice of yoga, religious importance of water, swastika, chakra etc. as symbols, amulets, use of tantra-mantras, use of ornaments, multi-cropped farming system, fire worship or yagya, use of seals, Ikka cart and bullock cart, internal and external trade etc.

unacademy

सैंधव सभ्यता की देन

- सैंधव सभ्यता की एक प्रमुख देन नगरीय जीवन के क्षेत्र में है। पूर्ण विकसित नगरीय जीवन का सूत्रपात इसी सभ्यता से हुआ।

- A major contribution of the Indus civilization is in the field of urban life. Fully developed urban life originated from this civilization.

unacademy

अभ्यास प्रश्न

1. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथनसत्य है/हैं?

1. यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी। यद्यपि इसमें धार्मिक तत्त्वउपस्थित थे, पर वे वर्चस्वशाली नहीं थे।

2. उस काल में भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।

- कूट: (a) केवल 1 (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

- 1. Which of the following statement(s) is/are true with respect to the Indus Valley Civilization?

- 1. It was primarily a cosmic civilization. Although religious elements were present in it, they were not dominant.

- 2. During that period, clothes were made from cotton in India.

- Code: (a) 1 only (b) 2 only
- (c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

अभ्यास प्रश्न

1. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथनसत्य है/हैं?

1. यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी। यद्यपि इसमें धार्मिक तत्त्वउपस्थित थे, पर वे वर्चस्वशाली नहीं थे।

2. उस काल में भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।

- कूट: (a) केवल 1 (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

2. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिंधु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण है/हैं?

1. उनके विशाल महल और मंदिर होते थे।

2. वे देवी और देवताओं दोनों की पूजा करते थे।

3. वे युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे गए रथों का प्रयोग करते थे।

(a) 1 और 2 (b) केवल 2

(c) 1,2 और 3 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

- 2. Which of the following character(s) is/are the correct depiction of the people of Indus Civilization?
- 1. They had huge palaces and temples.
- 2. They worshiped both gods and goddesses.
- 3. They used chariots drawn by horses in battle.
- (a) 1 and 2 (b) 2 only
- (c) 1, 2 and 3 (d) none of the above

अभ्यास प्रश्न

2. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिंधु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण है/हैं?

1. उनके विशाल महल और मंदिर होते थे।

2. वे देवी और देवताओं दोनों की पूजा करते थे।

3. वे युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे गए रथों का प्रयोग करते थे।

(a) 1 और 2 (b) केवल 2

(c) 1,2 और 3 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

unacademy

अभ्यास प्रश्न

3. निम्नलिखित पशुओं में से किस एक का हड़प्पा संस्कृति में पाई गईमुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण (Representation) नहीं हुआ है?

a) गाय..

(b) हाथी

(c) गैंडा(

(d) बाघ

- 3. Which one of the following animals is not represented in the seals and terracotta artefacts found in the Harappan culture?
- a) Cow..
- (b) Elephant
- (c) Rhinoceros(
- (d) tiger

अभ्यास प्रश्न

3. निम्नलिखित पशुओं में से किस एक का हड़प्पा संस्कृति में पाई गईमुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण (Representation) नहीं हुआ है?

a) गाय..

(b) हाथी

(c) गैंडा(

(d) बाघ

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

unacademy

अभ्यास प्रश्न

4. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के उत्खनन सेसंबंधित नहीं है?

(a) आर.डी. बनर्जी

(b) के.एन. दीक्षित

(c) एम.एस. वत्स

(d) वी.ए. स्मिथ

- 4. Which of the following is not related to the excavations of Harappa and Mohenjodaro?
- (a) R.D. Banerjee
- (b) KN Dixit
- (c) M.S. Child
- (d) V.A. smith

अभ्यास प्रश्न

4. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के उत्खनन सेसंबंधित नहीं है?

(a) आर.डी. बनर्जी

(b) के.एन. दीक्षित

(c) एम.एस. वत्स

(d) वी.ए. स्मिथ

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

5. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हड़प्पा का बंदरगाह है?

(a) सिकंदरिया

(b) लोथल

(c) महास्थानगढ़(

d) नागपट्टनम्

- 5. Which one of the following is a Harappan port?
- (a) Alexandria
- (b) Lothal
- (c) Mahasthangarh(
- d) Nagapattinam

अभ्यास प्रश्न

5. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हड़प्पा का बंदरगाह है?

(a) सिकंदरिया

(b) लोथल

(c) महास्थानगढ़(

d) नागपट्टनम्

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

6. वह हड़प्पाकालीन नगर, जिसका प्रतिनिधित्व लोथल का पुरातत्त्व स्थल करता है, किस नदी पर स्थित था?

(a) नर्मदा

(b) माही

(c) भोगवा

(d) भीमा

- 6. On which river was the Harappan city, represented by the archaeological site of Lothal, situated?
- (a) Narmada
- (b) Mahi
- (c) Bhogwa
- (d) Bhima

अभ्यास प्रश्न

6. वह हड़प्पाकालीन नगर, जिसका प्रतिनिधित्व लोथल का पुरातत्त्व स्थल करता है, किस नदी पर स्थित था?

(a) नर्मदा

(b) माही

(c) भोगवा

(d) भीमा

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

7. एक उन्नत जल-प्रबंधन व्यवस्था का साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है?

(a) आलमगीरपुर से

.(b) धौलावीरा से

(c) कालीबंगा से

(d) लोथल से

- 7. From where has the evidence of an improved water management system been found?
- (a) Alamgirpur
- .(b) Dholavira
- (c) Kalibanga
- (d) Lothal

अभ्यास प्रश्न

7. एक उन्नत जल-प्रबंधन व्यवस्था का साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है?

(a) आलमगीरपुर से

(b) धौलावीरा से

(c) कालीबंगा से

(d) लोथल से

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

8. स्थापित सिंधु घाटी सभ्यता जिन नदियों के तट पर बसी थी, वे कौन-सी थी?

1. सिंधु 2. चेनाब

3. झेलम 4. गंगा

कूट: (a) 1 और 2 (b) 1,2 और 3

(c) 2,3 और 4 (d) 1,2,3 और 4

- 8. What were the rivers on which the established Indus Valley Civilization was settled?
- 1. Sindhu 2. Chenab
- 3. Jhelum 4. Ganga
- Codes: (a) 1 and 2 (b) 1,2 and 3
- (c) 2,3 and 4 (d) 1,2,3 and 4

अभ्यास प्रश्न

8. स्थापित सिंधु घाटी सभ्यता जिन नदियों के तट पर बसी थी, वे कौन-सी थी?

1. सिंधु 2. चेनाब

3. झेलम 4. गंगा

कूट: (a) 1 और 2 (b) 1,2 और 3

(c) 2,3 और 4 (d) 1,2,3 और 4

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

9. सिंधु घाटी सभ्यता गैर-आर्य थी, क्योंकि

(a) वह नगरीय सभ्यता थी।

(b) उसकी अपनी लिपि थी।

(c) उसकी खेतिहर अर्थव्यवस्था थी।

(d) उसका विस्तार नर्मदा घाटी तक था।

- 9. Indus Valley Civilization was non-Aryan because
- (a) It was an urban civilization.
- (b) He had his own script.
- (c) It had an agricultural economy.
- (d) It extended till Narmada valley.

unacademy

अभ्यास प्रश्न

9. सिंधु घाटी सभ्यता गैर-आर्य थी, क्योंकि

(a) वह नगरीय सभ्यता थी।

(b) उसकी अपनी लिपि थी।

(c) उसकी खेतिहर अर्थव्यवस्था थी।

(d) उसका विस्तार नर्मदा घाटी तक था।

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

unacademy

Ancient history of india

Special class

Bhupendra Singh Dinkar • Sept 2, 2023

unacademy



प्राचीन भारतीय इतिहास के सोत एवं प्रागैतिहासिक काल

(The Sources of Ancient Indian Historyand Prehistoric Period)



भूमिका

- इतिहास अतीत में किये गए मानव-प्रयास की आनुक्रमिक कथा है।
- इतिहास के आवश्यक अंग हैं- अतीत, सभ्य युग, मानव-प्रयास और घटनाओं का आनुक्रमिक प्रसार। 'वर्तमान' जो अभी जीवित है, इतिहास का विषय नहीं है। यद्यपि वह शीघ्र अतीत होकर उसका अंग हो जाएगा।

- History is a sequential story of human effort in the past.
- The essential parts of history are past, civilized era, human effort and the sequential spread of events. The 'present' which is still alive is not a matter of history. Although it will soon become a part of the past.

unacademy

भूमिका

- घटना जो संपन्न हो चुकी- चाहे अभी, चाहे सहस्राब्दियों पूर्व, इतिहास का अंग हो जाती है। इतिहास विगत घटनाओं का चिंतन करता है।
- जब हम ऐतिहासिक क्रम में घटनाओं का वर्णन करते हैं तब उन्हें काल-प्रसार में वितरित करते हैं और जब भौगोलिक क्रम से इनका उल्लेख करते हैं तब उन्हें स्थानानुसार रखते हैं।

- Events that have happened – whether now, whether millennia ago, become part of history. History reflects on past events.
- When we describe events in historical order, we distribute them over time, and when we describe them in geographical order, we place them.

भूमिका

- इतिहास और भूगोल दोनों कारण और परिणाम के साथ घटनाओं की तिथि और स्थान को व्यवस्था प्रदान करते हैं। अतः निरन्तरता व परिवर्तनीयता का समसामयिक विश्लेषण ही इतिहास है।
- इतिहास हमारी और हमारे समाज की दशा व दिशा का निर्धारण करता है और भविष्य को सुरक्षित बनाने का प्रयास करता है।

- Both History and Geography provide the arrangement of date and place of events along with cause and result. Therefore, the contemporary analysis of continuity and variability is history.
- History determines the condition and direction of us and our society and tries to make the future secure.

unacademy

भूमिका

- प्राचीन भारत का इतिहास मानव सभ्यता के उस समय का इतिहास है, जब वह अपने निर्माण की अवस्था में था।
- विशाल पर्वतमालाओं और नदियों की भूमिका प्राचीन भारत के इतिहास के निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण रही है। वर्तमान मानव का स्वरूप क्रमिक विकास का परिणाम है।

- The history of ancient India is the history of human civilization when it was in its formation stage.
- The role of huge ranges and rivers has been very important in the formation of the history of ancient India. The present human form is the result of gradual evolution.

unacademy

भूमिका

- इतिहासकारों ने अध्ययन हेतु सरलता की दृष्टि से इतिहास को कई भागों में वर्गीकृत किया है।
- प्राचीन भारत उसी वर्गीकरण का एक भाग है। ऐतिहासिक कालक्रमों का अध्ययन हम ऐतिहासिक सामग्री/स्त्रोतों के आधार पर करते हैं।

Historians have classified history into several parts for the sake of ease of study.

- Ancient India is a part of that classification. We study historical chronologies on the basis of historical material/sources.

unacademy

भूमिका

- चूँकि इतिहास उन बातों का वृत्तांत होता है, जो भूतकाल में हुई हों, इसलिये मूलतः महत्त्वपूर्ण तथ्यों को चुनकर अतीत का पुनर्निर्माण करने को ही इतिहास कहते हैं।
- ये महत्त्वपूर्ण तथ्य हमारे लिये कई रूपों में सुरक्षित हैं जिन्हें हम इतिहास की सामग्री/स्रोत कहते हैं।

- Since history is the account of those things which have happened in the past, therefore it is called history to reconstruct the past by selecting important facts.
- These important facts are preserved for us in many ways which we call the material/source of history.

प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्रोत

- प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत अनेक और विविध प्रकार के हैं।
- हमारे इतिहास के स्रोतों के क्षेत्र में किसी नदी के तट पर एक निर्जन टीले को खोदकर निकाले गए प्रागैतिहासिक काल के मनुष्य द्वारा पत्थर को काटकर बनाए गए गँडासों से लेकर भव्य इमारतों के भग्नावशेषों और राजकवि बाण के 'हर्षचरित' तक सभी प्रकार की चीजें शामिल हैं।

- The sources of ancient Indian history are many and varied.
- The scope of our sources of history includes all kinds of things from prehistoric man-made stone-cut cisterns dug out of a deserted mound on the bank of a river to the ruins of grand buildings and the 'Harshacharita' of the royal poet Baan. .

प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्रोत

- अपने अध्ययन की सुविधा के उद्देश्य से हम उन्हें मोटे-मोटे रूप से दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं- एक तो साहित्यिक और दूसरा पुरातत्त्व संबंधी सामग्री। इन दो श्रेणियों को फिर और छोटी-छोटी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

- For the convenience of our study, we can broadly divide them into two categories – literary and archeological material. These two categories can then be further divided into smaller categories.

पुरातात्त्विक सोत अभिलेख

- प्राचीन भारत के अधिकांश अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तंभों, ताम्रपत्रों,दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं।
- सबसे प्राचीन अभिलेखों में मध्य एशिया के बोगजकोई से प्राप्त अभिलेख हैं। इस पर वैदिक देवता-मित्र, वरुण, इंद्र और नासत्य के नाम मिलते हैं।

- Most of the inscriptions of ancient India are engraved on stone rocks, pillars, copper plates, walls and statues.
- The oldest inscriptions are those from Bogjakoi in Central Asia. It bears the names of the Vedic gods- Mitra, Varuna, Indra and Nasatya.

पुरातात्त्विक सोत अभिलेख

- इनसे ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में मदद मिलती है।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं जो 300 ई. पू. के लगभग हैं। डी.आर. भंडारकर नामक विद्वान ने केवल अभिलेखों के आधार पर ही अशोक का इतिहास लिखने का सफल प्रयास किया है।
- अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी तथा अरमाइक लिपियों में मिले हैं।

- These help in knowing the date of Rigveda.
- The oldest inscriptions in India are those of Ashoka dating back to 300 BC. are approx. Dr. A scholar named Bhandarkar has made a successful attempt to write the history of Ashoka only on the basis of inscriptions.
- Ashoka's inscriptions have been found in Brahmi, Kharoshthi, Unani and Aramaic scripts.

पुरातात्त्विक सोत अभिलेख

- मास्की, गुर्जरा, निटूर एवं उदेगोलम से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है तथा अन्य अभिलेखों में उसे 'देवानांपियपियदसि' (देवों का प्यारा) कहा गया है।
- सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोकके अभिलेख को पढ़ा था।

- Ashoka's name is clearly mentioned in the inscriptions obtained from Maski, Gurjara, Nitur and Udegolam and in other inscriptions he has been called 'Devanampiyappiyadasi' (beloved of the gods).
- For the first time in 1837, James Prinsep read Ashoka's inscription written in Brahmi script.

पुरातात्त्विक सोत अभिलेख

- अशोक के बाद भी अभिलेखों की परम्परा कायम रही।
- अब हमें अनेक प्रशस्तियाँ मिलने लगीं जिनमें दरबारी कवियों अथवा लेखकों द्वारा अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा के शब्द मिलते हैं।
- इनसे संबंधित शासकों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं, जिनमें प्रमुख हैं

- The tradition of inscriptions continued even after Ashoka.
- Now we started getting many commendations in which words of praise of their patrons are found by court poets or writers.
- Important information is found about the rulers related to them, the main ones are

पुरातात्त्विक सोत अभिलेख

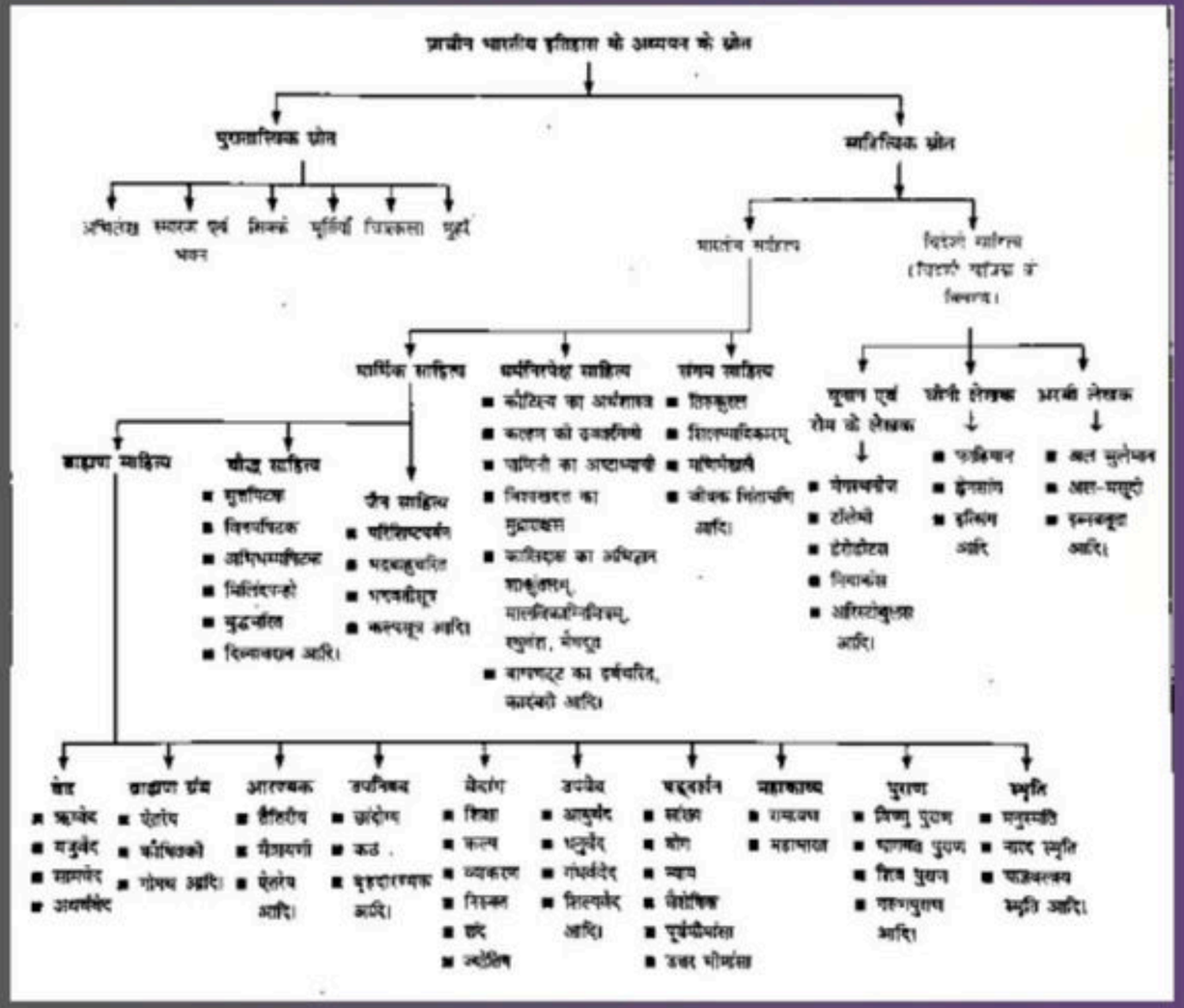
अभिलेख	शासक	विषय
हाथीगुम्फा अभिलेख	खारवेल	खारवेल के शासन की घटनाओं काक्रमबद्ध विवरण
जूनागढ़ अभिलेख(गिरनार अभिलेख)	रुद्रदामन	इसमें रुद्रदामन की विजयों, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवरण प्राप्त होता है।
नासिक अभिलेख	गौतमी बलश्री(रचनाकार)	सातवाहनकालीन घटनाओं का विवरण (गौतमीपुत्र शातकर्णी से संबंधित)
प्रयाग स्तंभ लेख	समुद्रगुप्त	इसके विजय एवं नीतियों का पूरा विवरण
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय	हर्ष एवं पुलकेशिन के युद्ध का विवरण
भीतरी स्तंभ लेख	स्कंदगुप्त	इसके जीवन की अनेक महत्त्वपूर्णघटनाओं का विवरण
मंदसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोधर्मन	सैनिक उपलब्धियों का वर्णन

पुरातात्त्विक सोत अभिलेख

- गैर-सरकारी लेखों में यवन राजदूत हेलियोडोरस का वेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुड़ स्तम्भ लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिससे द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में मध्य भारत में भागवत धर्म विकसित होने का प्रमाण मिलता है।

- Among the non-official writings, the Garuda pillar inscription received by the Yavana ambassador Heliodorus from Vesnagar (Vidisha) is particularly noteworthy, which gives evidence of the development of Bhagavata religion in central India in the second century BC.

पुरातात्त्विक सोत अभिलेख



स्मारक और भवन

- स्मारक और भवनों से जनता की आध्यात्मिकता तथा धर्मनिष्ठा काज्ञान होता है।
- हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त भवनों से 5,500 वर्ष पुरानी सैंधव सभ्यता का पता चला है। (नवीन शोधके अनुसार, सिंधु घाटी सभ्यता लगभग 8,000 साल पुरानी है।)

- The spirituality and piety of the people are known through monuments and buildings.
- The 5,500-year-old Indus civilization has been unearthed from the excavations of Harappa and Mohenjodaro. (According to new research, the Indus Valley Civilization is about 8,000 years old.)

स्मारक और भवन

- अतरंजीखेड़ा आदि की खुदाईयों से पता चलता है कि देश में लोहेका प्रयोग ईसा पूर्व 1000 के लगभग प्रारंभ हो गया था।
- प्राचीन काल में भारत में भारी संख्या में मंदिरों का निर्माण हुआ,जिनके अवशेष बिखरे रूप में पूरे देश में हैं।

- The excavations of Atranjikheda etc. show that the use of iron in the country started around 1000 BC.
- In ancient times, a large number of temples were built in India, whose remains are scattered all over the country.

unacademy

स्मारक और भवन

- महलों और मंदिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्तप्रकाश पड़ता है।
- विभिन्न स्थानों से प्राप्त मंदिर, जैसे- देवगढ़ का दशावतार मंदिर(झाँसी), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर), अजंता की गुफाओं के चित्र, सुल्तानगंज से प्राप्त बुद्ध की ताम्रमूर्ति आदि से हिंदू कला एवंसभ्यता के पर्याप्त विकसित होने के प्रमाण मिलते हैं।

considerable light on the development of architecture.

- Temples found from different places, such as the Dashavatar temple of Deogarh (Jhansi), the temple of Bhitargaon (Kanpur), the paintings of the Ajanta caves, the copper statue of Buddha found from Sultanganj, etc. give evidence of the substantial development of Hindu art and civilization.

unacademy

स्मारक और भवन

- उत्तर भारत के मंदिर 'नागर शैली', मध्य भारत के मंदिर 'बेसरशैली' तथा दक्षिण भारत के मंदिर 'द्रविड़ शैली' से निर्मित हैं।
- दक्षिण भारत में तंजौर का राजराजेश्वर मंदिर द्रविड़ शैली तथाउत्तर भारत में खजुराहो का कन्दरिया महादेव का मंदिर नागर शैलीका उत्कृष्ट उदाहरण है।

- The temples of North India are built in the 'Nagar style', the temples of Central India in the 'Besar style' and the temples of South India in the 'Dravidian style'.
- The Rajarajeshwara temple at Tanjore in South India is an excellent example of the Dravidian style and the temple of Kandariya Mahadev at Khajuraho in North India is an excellent example of the Nagara style.

स्मारक और भवन

- भारत के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक द्वीपों से हिंदू संस्कृति से संबंधित स्मारक मिलते हैं।
- इनमें मुख्य रूप से जावा का बोरोबुदुर स्तूप (महायान बौद्ध स्तूप) तथा कम्बोडिया के अंकोरवाट मंदिर का उल्लेख किया जा सकता है।

- Apart from India, monuments related to Hindu culture are found from many islands of South-East Asia.
- Among these, mainly mention can be made of Borobudur Stupa (Mahayana Buddhist Stupa) of Java and Angkor Wat Temple of Cambodia.

सिक्के

- कुछ प्राप्त मुद्राओं में तिथियाँ भी खुदी हैं जो कालक्रम निर्धारण में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई हैं।
- पुराने सिक्के तांबा, चांदी, सोना और सीसा धातु के बनते थे।

- Dates are also engraved in some of the received coins, which have proved to be very helpful in determining the chronology.
- Old coins were made of copper, silver, gold and lead metal.

सिक्के

- प्राचीनतम सिक्कों को 'आहत सिक्के' कहा जाता है। आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के ई. पू. पाँचवीं सदी के हैं। ठप्पा मारकर बनाए जाने के कारण ही भारतीय भाषाओं में इन्हें 'आहत मुद्रा' कहते हैं।
- पंचमार्क या आहत सिक्कों पर पेड़, मछली, साँड़, हाथी, अर्द्धचंद्रआदि के चिह्न बने होते थे।

- The oldest coins are called 'hurt coins'. Wounded Coins or Punchmarked Coins BC belong to the fifth century. Due to being stamped, they are called 'hurt currency' in Indian languages.
- The marks of trees, fish, bull, elephant, crescent etc. were made on the punchmark or inscribed coins.

सिक्के

- सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में बने हैं, जो मुख्यतः सीसे, चांदी,तांबा एवं सोने के हैं। • सातवाहनों ने सीसे तथा गुप्त शासकों ने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किये।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने का कार्य यवन शासकों ने किया।

- Most coins have been made in the post-Mauryan period, which are mainly of lead, silver, copper and gold. • The Satavahanas issued the most coins of lead and the Gupta rulers issued the maximum number of gold coins.
- For the first time, the Yavana rulers did the work of writing articles on coins.

सिक्के

- समुद्रगुप्त की वीणा बजाते हुए मुद्रा वाले सिक्के से उसके संगीतप्रेमी होने का प्रमाण मिलता है।
- नोट: सिक्कों के अध्ययन को 'न्यूमिस्मेटिक्स' कहा जाता है।

- The coin of Samudragupta playing the veena gives evidence of his being a lover of music.
- Note: The study of coins is called 'Numismatics'.

unacademy

मूर्तियाँ

- चीन भारतीय इतिहास में मूर्तियों का निर्माण कुषाण काल से आरंभ होता है।
- कुषाणकालीन मूर्तियों पर वैदेशिक प्रभाव है, जबकि मथुरा कला पूर्णतः स्वदेशी है।
- भरहुत, बोधगया, साँची तथा अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की अति सजीव झलक देखने को मिलती है।

- The making of sculptures in China Indian history starts from the Kushan period.
- The Kushan period sculptures have foreign influence, whereas Mathura art is completely indigenous.
- The sculptures of Bharhut, Bodh Gaya, Sanchi and Amravati give a very lively glimpse of the life of the common man.

unacademy

चित्रकला

- अजंता के चित्रों में मनोभावों की सुंदर झलक मिलती है। चित्रकला में 'माता और शिशु' तथा 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों से गुप्त काल की कलात्मक उन्नति का पूर्ण आभास होता है।
- बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी है, जो अजंता में है।

- The paintings of Ajanta give a beautiful glimpse of emotions. Paintings like 'Mother and Child' and 'Deathing Princess' give a full impression of the artistic progress of the Gupta period.
- The most famous and often painted painting of the Bodhisattva Padmapani is at Ajanta.

unacademy

मुहरें

- अवशेषों से प्राप्त मुहरों से प्राचीन भारत का इतिहास लिखने में बहुतसहायता मिलती है।
- मुहरों से व्यापारिक, धार्मिक, आर्थिक जीवन के बारे में पर्याप्तजानकारी प्राप्त होती है।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और बसाढ़ से प्राप्त मिट्टी की मुहरों में बनेधार्मिक प्रतीकों से उनके धार्मिक अवस्थितियों का ज्ञान होता है।

- The seals obtained from the remains help a lot in writing the history of ancient India.
- Seals provide sufficient information about commercial, religious, economic life.
- Their religious locations are known from the religious symbols made in clay seals found from Harappa, Mohenjodaro and Basadh.

साहित्यिक स्रोत

- साहित्यिक स्रोत के अंतर्गत हम धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य का अध्ययन करते हैं। धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेत्तर ग्रंथों की चर्चा की जाती है।
- ब्राह्मण ग्रंथों में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृतिग्रंथ आते हैं, जबकि ब्राह्मणेत्तर ग्रंथों में बौद्ध तथा जैन साहित्यों से संबंधित रचनाओं का उल्लेख किया जाता है।

- Under literary sources, we study religious literature and secular literature. Brahmanical and non-Brahmin texts are discussed in religious literature.
- The Vedas, Upanishads, Ramayana, Mahabharata, Puranas and Smritis come in Brahmanical texts, while non-Brahmin texts refer to works related to Buddhist and Jain literature.

साहित्यिक स्रोत

- लौकिक साहित्य में ऐतिहासिक ग्रंथों, जीवनियाँ, यात्रा-वृत्तांत, कल्पना-प्रधान तथा गल्प साहित्य का वर्णन किया जाता है। इनका अलग-अलग विवरण इस प्रकार है :-

- In cosmic literature, historical texts, biographies, travelogues, fiction-oriented and fiction literature are described. Their different details are as follows:-

unacademy

ब्राह्मण साहित्य

unacademy

वेद

- वेदों के द्वारा प्राचीन आर्यों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिकराजनीतिक जीवन के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है। वैदिक युग की सांस्कृतिक दशा के ज्ञान का एकमात्र स्रोत वेद है।
- वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद।

- The Vedas provide sufficient information about the social, economic, religious and political life of the ancient Aryans. The only source of knowledge of the cultural condition of the Vedic age is the Vedas.
- There are four Vedas – Rigveda, Yajurveda, Samaveda and Atharvaveda.

ऋग्वेद (1500 ई.पू. 1000 ई.पू.)

- यह सबसे प्राचीनतम वेद माना जाता है।
- यह एक ऐसा वेद है जो ऋचाओं में बद्ध है।
- ऋग्वेद में कुल 10 मंडल, 1028 सूक्त एवं 10,580 ऋचाएँ हैं। इस वेद के पढ़ने वाले ऋषि को 'होतृ' कहते हैं।

- It is considered to be the oldest Veda.
- This is a Veda which is bound in hymns.
- Rigveda consists of 10 mandalas, 1028 hymns and 10,580 hymns. The sages who read this Veda are called 'Hotri'.

ऋग्वेद (1500 ई.पू. 1000 ई.पू.)

- ऋग्वेद का पहला एवं10वाँ मंडल सबसे अंत में जोड़ा गया है।
- ऋग्वेद के तीसरे मंडल में सूर्य देवता 'सविता' को समर्पित प्रसिद्धगायत्री मंत्र है।
- 9वें मंडल में देवता सोम का उल्लेख है तथा 10वाँ मंडल चार्तुवर्ण्यसमाज की संकल्पना का आधार है।ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रंथ हैं- ऐतरेय एवं कौषित की अथवा शंखायन।

- The first and the 10th mandalas of the Rigveda are added last.
- The third mandala of the Rigveda contains the famous Gayatri Mantra dedicated to the sun god 'Savita'.
- The deity Soma is mentioned in the 9th mandala and the 10th mandala is the basis of the concept of Chaturvarnya Samaj. Rigveda has two Brahmanical texts – Aitareya and Kaushita or Shankhayan.

ऋग्वेद (1500 ई.पू. 1000 ई.पू.)

- नोटः संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा 'ऋग्वेद' को विश्व मानव धरोहर के साहित्य में शामिल किया गया है।

- Note: 'Rigveda' has been included in the literature of World Human Heritage by United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (UNESCO).

यजुर्वेद

- इसमें यज्ञों के नियमों या विधानों का संकलन मिलता है। यही कारणहै कि इसे कर्मकांडीय वेद भी कहा जाता है।
- यजुर्वेद पद्य एवं गद्य दोनों में है। यजुर्वेद के दो भाग हैं- शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद।
- शुक्ल यजुर्वेद केवल पद्य में है जबकिकृष्ण यजुर्वेद, गद्य एवं पद्य दोनों में है।

- In this a compilation of the rules or regulations of the sacrifices is found. This is the reason why it is also called ritualistic Veda.
- Yajurveda is in both poetry and prose. Yajurveda has two parts- Shukla Yajurveda and Krishna Yajurveda.
- Shukla Yajurveda is only in verse whereas Krishna Yajurveda is in both prose and verse.

यजुर्वेद

- यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाला पुरोहित 'अध्वर्यु' कहलाता है।
- यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषद- कठोपनिषद, इशोपनिषद, श्वेताश्वरोपनिषद तथा मैत्रायणी उपनिषद हैं।
- यजुर्वेद का अंतिम अध्याय ईशावास्य उपनिषद है, जिसका संबंध आध्यात्मिक चिंतन से है। • यजुर्वेद के दो ब्राह्मण ग्रंथ हैं-शतपथ एवं तैत्तरीय

- The priest who recites the mantras of Yajurveda is called 'Adhvaryu'.
- The main Upanishads of Yajurveda are Kathopanishad, Isopanishad, Shvetaswaropanishad and Maitrayani Upanishad.
- The last chapter of the Yajurveda is the Ishavasya Upanishad, which deals with spiritual contemplation. • There are two Brahmanical texts of Yajurveda - Shatapatha and Taittiriya

सामवेद

- 'साम' का अर्थ 'गान' होता है। इसमें मुख्यतः यज्ञों के अवसर परगाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इसे भारतीय संगीत का जनक कहा जाता है। सात स्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध, नि) की उत्पत्तिइसी से हुई।
- सामवेद में कुल 1875 ऋचाएँ हैं।
- सामवेद के मंत्रों को गाने वाला 'उद्गाता' कहलाता है। इसमें मुख्यतःसूर्य स्तुति के मंत्र हैं।

- The meaning of 'sam' is 'song'. It mainly contains a collection of mantras to be sung on the occasion of Yagyas. It is called the father of Indian music. The seven vowels (sa, re, g, ma, pa, dha, ni) originated from this.
- There are total 1875 hymns in Samaveda.
- One who sings the hymns of Samaveda is called 'Udgata'. It mainly consists of chants of praise to the sun.

unacademy

सामवेद

- सामवेद में मूल रूप से 99 मंत्र हैं, शेष ऋग्वेद से लिये गए हैं।
- सामवेद के प्रमुख उपनिषद- छांदोग्य तथा जैमिनीय हैं।
- सामवेद का ब्राह्मण ग्रंथ- पंचविश ब्राह्मण, षडविश ब्राह्मण है।

There are basically 99 mantras in the Samaveda, the rest are taken from the Rigveda.

- The main Upanishads of Samaveda are Chandogya and Jaiminiya.
- The Brahmin text of Samaveda is Panchvish Brahmin, Shadvish Brahmin.

unacademy

अथर्ववेद

- इसकी रचना अथर्व तथा अंगिरस ऋषि द्वारा सभी ग्रंथों के बाद मेंकी गई। इसीलिये इसे 'अथर्वांगिरस वेद' भी कहा जाता है। इसमें 731 सूक्त, 20 अध्याय तथा लगभग 6000 मंत्र हैं।
- ब्रह्म ज्ञान, धर्म, समाजनिष्ठा, औषधि प्रयोग, रोग निवारण,जादू-टोना, तंत्र-मंत्र आदि अनेक विषयों का वर्णन है।

- It was composed by Atharva and Angiras after all the scriptures. That is why it is also called 'Atharvangiras Veda'. It has 731 hymns, 20 chapters and about 6000 mantras.
- Brahma knowledge, religion, social loyalty, drug use, disease prevention, witchcraft, tantra-mantra etc. are described in many subjects.

unacademy

अथर्ववेद

- अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण ग्रंथ 'गोपथ' है।
- अथर्ववेद के उपनिषद - मुंडकोपनिषद, प्रश्नोपनिषद तथामांडूक्योपनिषद।
- मुंडकोपनिषद से ही भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेवजयते' लिया गया है।इसमें सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।
- नोट: इन चार वेदों को 'संहिता' कहा जाता है।

'Gopatha'.

- The Upanishads of Atharvaveda - Mundakopanishad, Prasnopanishad and Mandukyopanishad.
- India's national motto 'Satyameva Jayate' has been taken from Mundko Upanishad itself. In this, Sabha and Samiti have been called two daughters of Prajapati.
- Note: These four Vedas are called 'Samhita'.

unacademy

ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद

- 'संहिता' के पश्चात् ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद का स्थान हैइनसे उत्तर वैदिककालीन समाज तथा संस्कृति के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- ब्राह्मण ग्रंथ वैदिक संहिताओं की व्याख्या के लिये गद्य में लिखे गएहैं। प्रत्येक संहिता के लिये अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथ लिखे गए हैं, जो तालिका में क्रमशः उल्लिखित हैं।

- Brahmins, Aranyakas and Upanishads have a place after 'Samhita'. Important information about the society and culture of the later Vedic period is obtained from them.
- Brahman texts are written in prose to explain the Vedic codes. Separate Brahmanical texts have been written for each Samhita, which are mentioned in the table respectively.

ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद

ऋग्वेद	ऐतरेय एवं कौषित की ब्राह्मण
यजुर्वेद	शतपथ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण
सामवेद	पंचविश एवं षडविश ब्राह्मण
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण

unacademy

वेदांग तथा सूत्र

- वेदों को भली-भाँति समझने के लिये छः वेदांगों की रचना की गईशिक्षा (उच्चारण विधि),ज्योतिष (भाग्यफल),कल्प (कर्मकाण्ड), व्याकरण (शब्द व्युत्पत्ति), निरुक्त (भाषा विज्ञान) तथा छंद (चतुष्पदी श्लोक)। ये वेदों के शुद्ध उच्चारण तथा यज्ञादि करने में सहायक थे।

- In order to understand the Vedas, six Vedangas were composed, education (pronunciation method), astrology (fortune), kalpa (ritual), grammar (word etymology), nirukta (linguistics) and chhand (Chatushpadi verse). They were helpful in the correct pronunciation of Vedas and performing sacrifices.

unacademy

वेदांग तथा सूत्र

- इसी प्रकार, वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिये सूत्र साहित्य का प्रणयन किया गया।
- श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र तथा धर्मसूत्रों के अध्ययन से हम यज्ञीय विधि-विधानों, कर्मकाण्डों तथा राजनीति,विधि एवं व्यवहार से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करते हैं।

- Similarly, in order to keep the Vedic literature intact, the Sutra literature was propounded.
- From the study of Sraut Sutras, Grihya Sutras and Dharmasutras, we get important information related to sacrificial rituals, rituals and politics, law and behavior.

महाकाव्य

- वैदिक साहित्य के बाद भारतीय साहित्य में महाकाव्यों का समयआता है। इसमें रामायण और महाभारत प्रमुखत: शामिल हैं।
- रामायण हमारा आदिकाव्य है जिसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। इससे हमें हिन्दुओं तथा यवनों और शकों के संघर्ष का वर्णन मिलता है।

- After Vedic literature comes the time of epics in Indian literature. It mainly includes Ramayana and Mahabharata.
- Ramayana is our epic poem which was composed by Maharishi Valmiki. From this we get a description of the struggle between the Hindus and the Yavanas and the Shakas.

महाकाव्य

- महाभारत की रचना वेदव्यास ने की थी। इससे प्राचीन भारतवर्ष कीसामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक दशा का वर्णन मिलता है।
- ऐतिहासिक दृष्टि से महाकाव्यों को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता,क्योंकि इसमें वर्णित कथाओं में कल्पना का समावेश अधिक होता है।

- The Mahabharata was composed by Ved Vyas. This gives a description of the social, religious and political condition of ancient India.
- Historically, epics are not given special importance, because the fiction is more involved in the stories described in it.

पुराण

- पुराणों में प्राचीन भारतीय इतिहास का अच्छा क्रमबद्ध वर्णन मिलता है।
- पुराणों की संख्या 18 है।
- पुराणों के रचयिता एवं संकलनकर्ता लोमहर्ष तथा उनके पुत्र उग्रश्रवाको माना जाता है।

- A good systematic description of ancient Indian history is found in the Puranas.
- The Puranas are 18 in number.
- Lomaharsha and his son Ugrashrava are believed to be the authors and compilers of the Puranas.

unacademy

पुराण

- पुराणों में मत्स्यपुराण सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक है।
- पुराण प्राचीन काल से लेकर गुप्त काल तक की ऐतिहासिक घटनाओं का परिचय कराते हैं।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व के पहले के प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिये तो पुराण ही एकमात्र स्रोत हैं।

- Matsya Purana is the oldest and most authentic of the Puranas.
- The Puranas introduce historical events from the ancient period to the Gupta period.
- The Puranas are the only source for the reconstruction of ancient Indian history before the 6th century BCE.

unacademy

ब्राह्मणेत्तर साहित्य

unacademy

बौद्ध साहित्य

- भारतीय इतिहास के साधन के रूप में बौद्ध साहित्य का विशेषमहत्त्व है। बौद्ध साहित्य गंथो में 'त्रिपिटक' सबसे महत्त्वपूर्ण है।
- 'त्रिपिटक' बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन है। इसे तीन भागों मेंविभाजित किया गया है-विनयपिटक, सुत्तपिटक तथा अभिधम्मपिटक।

- Buddhist literature has a special significance as an instrument of Indian history. The Tripitaka is the most important of the Buddhist literature.
- The Tripitaka is a compilation of Buddha's teachings. It is divided into three parts – Vinaya Pitaka, Sutta Pitaka and Abhidhamma Pitaka.

बौद्ध साहित्य

- विनयपिटक, संघ संबंधी नियम तथा आचार संबंधी शिक्षाओं का संग्रह है।
- सुत्तपिटक, धार्मिक सिद्धांत तथा धर्मोपदेश का संग्रह है।
- वहीं, अभिधम्मपिटक दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह है।

- The Vinaya Pitaka is a collection of teachings on the rules and ethics of the union.
- The Sutta Pitaka is a collection of religious doctrines and sermons.
- At the same time, the Abhidhammapitaka is a collection of philosophical principles.

बौद्ध साहित्य

- बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए। बौद्ध ग्रंथों से संबंधित जातकों में बुद्ध से संबंधित घटनाओं का वर्णन है। 'दीपवंश' तथा 'महावंश' नामक दो पालि ग्रंथों से मौर्यकालीन इतिहासके विषय में जानकारी मिलती है।

- Buddhist texts were written in Pali language. The Jatakas related to Buddhist texts describe events related to Buddha. Information about Mauryan history is obtained from two Pali texts named 'Deepavansh' and 'Mahavansh'.

बौद्ध साहित्य

- नागसेन द्वारा रचित 'मिलिंदपन्हो' पालि भाषा में रचित महत्त्वपूर्णग्रंथ है। इसमें हिन्द-यवन शासक मिनाण्डर के विषय में सूचनाएँ मिलती है।
- बौद्ध धर्म के हीनयान संप्रदाय का प्रमुख ग्रंथ 'कथावस्तु' है जिसमेंमहात्मा बुद्ध का जीवनचरित अनेक कथानकों के साथ वर्णित है।

- 'Milindapanho' composed by Nagsen is an important book written in Pali language. In this, information about the Indo-Yavan ruler Minander is found.
- The main text of the Hinayana sect of Buddhism is 'Kathavastu', in which the life story of Mahatma Buddha is described with many stories.

बौद्ध साहित्य

- महायान संप्रदाय के ग्रंथ 'ललितविस्तर', 'दिव्यावदान' आदि हैं। ललितविस्तर में बुद्ध को देवता मानकर उनके जीवन तथा कार्यों का चमत्कारिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।
- दिव्यावदान से अशोक के उत्तराधिकारियों से लेकर पुष्यमित्र शुंग तक के शासकों के विषय में सूचना मिलती है।

- The texts of the Mahayana sect are 'Lalitavistar', 'Divyavadan' etc. Considering Buddha as a deity in Lalitavistara, a miraculous description of his life and works has been presented.
- Information about rulers from Divyavadana to the successors of Ashoka to Pushyamitra Shunga is found.

unacademy

जैन साहित्य

- जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है। जैन ग्रंथों में परिशिष्टपर्वन, भद्रबाहुचरित, आचरांगसूत्र, भगवतीसूत्र, कालिका पुराण आदि प्रमुख हैं।
- जैन धर्म का प्रारंभिक इतिहास, कल्पसूत्र' से ज्ञात होता है, जिसकी रचना भद्रबाहु ने की थी।

- Jain literature is called 'Agam'. In Jain texts, Appendix Parvan, Bhadrabahucharit, Acharangasutra, Bhagwatisutra, Kalika Purana etc. are prominent.
- The early history of Jainism is known from the 'Kalpasutra', which was composed by Bhadrabahu.

unacademy

लौकिक साहित्य

- लौकिक साहित्य के अंतर्गत ऐतिहासिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रंथों तथा जीवनियों का विशेष रूप से उल्लेख किया जाता है।
- ऐतिहासिक रचनाओं में 'अर्थशास्त्र' का विशेष रूप से उल्लेख किया जाता है।
- अर्थशास्त्र की रचना चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री कौटिल्य ने की थी। इसमें चंद्रगुप्त मौर्य की शासन-व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

- Historical and semi-historical texts and biographies are specially mentioned under the secular literature.
- Economics is specially mentioned in historical works.
- The Arthashastra was composed by Kautilya, the Prime Minister of Chandragupta Maurya. In this, sufficient light has been thrown on the governance system of Chandragupta Maurya.

unacademy

लौकिक साहित्य

- कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' भी विशेष उल्लेखनीय है। यह संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास है।
- इसमें आदिकाल से लेकर 1151 ई. के आरम्भ तक के कश्मीर के प्रत्येक शासक के काल की घटनाओं काक्रमानुसार वर्णन दिया गया है।

- 'Rajatarangini' composed by Kalhan is also noteworthy. This is the first attempt to write a systematic history of historical events in Sanskrit literature.
- In this, a chronological description of the events of the period of each ruler of Kashmir from the beginning of AD 1151 has been given.

लौकिक साहित्य

- अर्द्ध-ऐतिहासिक रचनाओं में पाणिनी की अष्टाध्यायी, कात्यायन कीवर्तिका, पतंजलि का महाभाष्य, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस तथाकालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् आदि उल्लेखनीय हैं।

- Among the semi-historical works are Panini's Ashtadhyayi, Katyayana's Kivartika, Patanjali's Mahabhashya, Visakhadatta's Mudrarakshasa and Kalidasa's Malavikagnimitram etc.

लौकिक साहित्य

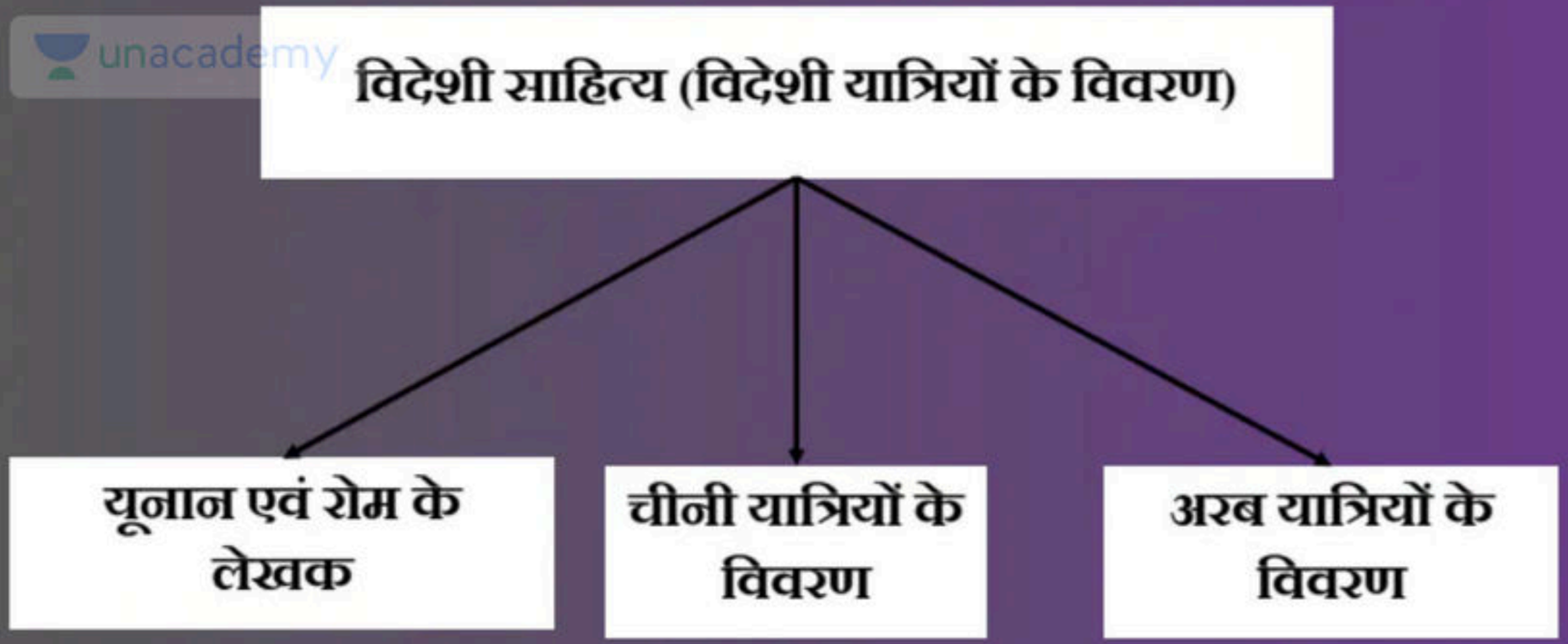
- ऐतिहासिक जीवनियों में अश्वघोष कृत बुद्धचरित, बाणभट्ट काहर्षचरित, वाक्पति का गौडवहो, विल्हण का विक्रमांकदेवचरित, संध्याकर नन्दी कृत 'रामचरित', हेमचंद्र कृत 'कुमारपालचरित', जयानक कृत 'पृथ्वीराज विजय' आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

- In historical biographies, Ashvaghosha's Buddhacharita, Banabhatta's Kaharshacharita, Vakpati's Gaudavaho, Vilhan's Vikramankadevcharit, Sandhyakar Nandi's 'Ramcharit', Hemchandra's 'Kumarpalcharit', Jayanak's 'Prithviraj Vijay' etc. are important.

प्रमुख साहित्यकार रचनाए

रचना	रचनाकार	विशेष तथ्य
अष्टाध्यायी	पाणिनी	व्याकरण ग्रंथ
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	मौर्य काल के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है।
महाभाष्य (अष्टाध्यायी पर टीका)	पतंजलि	पुष्यमित्र शुंग के विषय मे जानकारी
कथासरित्सागर	सोमदेव	मौर्य काल के विषय मे जानकारी मिलती है।
बृहत्कथामंजरी	क्षेमेंद्र	मौर्य काल के विषय मे जानकारी मिलती है।
अर्थशास्त्र (विषय–राजनीति)	कौटिल्य	मौर्य काल के बारे में प्रकाश पड़ता है।
नीतिसार	कामंदक	गुप्तकालीन राजतंत्र पर कुछ प्रकाश पड़ता है।
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	शुंग वंश के बारे में जानकारी
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	गुप्तकालीन समाज का वर्णन
हर्षचरित	बाणभट्ट	हर्ष की उपलब्धियों का वर्णन
रामचरित	संध्याकर नंदी	बंगाल के शासक रामपाल की जीवनकथा
पृथ्वीराज रासो	चंदबरदाई	पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियं का वर्णन
राजतरंगिणी	कल्हण	कश्मीर के राजवंशों की क्रमबद्ध जानकारी

unacademy


विदेशी साहित्य (विदेशी यात्रियों के विवरण)
यूनान एवं रोम के लेखक
चीनी यात्रियों के विवरण
अरब यात्रियों के विवरण

यूनान एवं रोम के लेखक

- यूनान के प्राचीन लेखकों में टेसियस तथा हेरोडोटस के नाम प्रसिद्ध हैं।
- टेसियस - ईरान का राजवैद्य था। टेसियस के वर्णन में अधिकांशतःकल्पित कहानियाँ हैं, जो पूर्णतः अविश्वसनीय हैं।
- हेरोडोटस- 'हेरोडोटस' को 'इतिहास का पिता' कहा जाता इसने 5वीं सदी ई. पू. 'हिस्टोरिका' की रचना की थी। इसमेंभारत-फारस के संबंधों का वर्णन किया गया है।

- The names of Tesseus and Herodotus are famous among the ancient Greek writers.
- Tesius - was the royal physician of Iran. The description of Tessius consists mostly of fiction, which is completely unbelievable.
- Herodotus- 'Herodotus' is called 'Father of History'. 'Historica' was composed. It describes Indo-Persian relations.

unacademy

यूनान एवं रोम के लेखक

- सिकंदर के साथ आने वाले लेखक थे- नियार्कस, ऑनेसिक्रिटसऔर अरिस्टोबुलस।
- सिकंदर के पश्चात् के लेखकों में तीन राजदूतों- मेगस्थनीज, डाइमेकसतथा डायोनीसियस के नाम उल्लेखनीय हैं।

- The writers who accompanied Alexander were Niarchus, Onesicritus and Aristobulus.
- The names of three ambassadors - Megasthenes, Diomechus and Dionysius are notable among the writers after Alexander.

यूनान एवं रोम के लेखक

- मेगस्थनीज ने 'इंडिका' की रचना की, जो सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था।
- मेगस्थनीज ने 'इंडिका' में मौर्ययुगीन समाज एवं संस्कृति के विषयमें लिखा है।
- डाइमेकस- यह सीरियन नरेश अंत्तियोकस का राजदूत था। यहबिंदुसार के राजदरबार में आया था।

- Megasthenes composed 'Indica', which was the ambassador of Seleucus Nicator.
- Megasthenes has written about Mauryan society and culture in 'Indica'.
- Dimachus- This was the ambassador of the Syrian king Antiochus. He had come to the court of Bindusara.

यूनान एवं रोम के लेखक

- डायोनिसियस- यह मिस्र नरेश टॉलेमी फिलाडेल्फस का राजदूतजो बिंदुसार (अन्य स्रोतों में अशोक भी पढ़ने में मिलता है) के राजदरबार में आया था।
- प्लिनी- इसने पहली सदी में 'नेचुरल हिस्ट्री' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें भारत के पशुओं, पौधों और खनिज पदार्थों की जानकारीमिलती है।

- Dionysius - This is the ambassador of the Egyptian king Ptolemy Philadelphus, who came to the court of Bindusara (Ashoka is also read in other sources).
- Pliny- He wrote a book named 'Natural History' in the first century, in which information about the animals, plants and minerals of India is found.

यूनान एवं रोम के लेखक

- टॉलेमी की पुस्तक 'ज्योग्राफी' और किसी अज्ञात लेखक की पुस्तक'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि इनसे भारत के भूगोल तथा व्यापारिक वस्तुओं के बारे में जानकारी मिलती है।

- Ptolemy's book 'Geography' and an unknown author's book 'Periplus of the Erythraean Sea' are important because they give information about India's geography and trade goods.

unacademy

चीनी यात्रियों के विवरण

- प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों में चीनी यात्रियों के यात्रा-वृत्तांत भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये चीनी यात्री बौद्ध मतानुयायी थे तथा भारत में बौद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा तथा बौद्ध धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये आए थे। इनमें प्रमुख थे

- The travelogues of Chinese travelers also occupy an important place in the sources of ancient Indian history. These Chinese travelers were Buddhist followers and came to India to visit Buddhist pilgrimage places and to get information about Buddhism. chief among them were

चीनी यात्रियों के विवरण

- फाहियान- यह 5वीं सदी के प्रारंभ में चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के शासनकाल में भारत आया था। इसने भारतीय समाज, यहाँ की संस्कृति एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है।
- ह्वेनसांग- यह 7वीं सदी में हर्षवर्धन के समय भारत आया था।इसकी रचना 'सी-यू-की' है।

- Fahian- It came to India in the early 5th century during the reign of Chandragupta II (Vikramaditya). It has thrown light on the Indian society, its culture and economic condition.
- Hiuen Tsang- It came to India in the 7th century at the time of Harshavardhana. Its composition is 'Si-u-ki'.

चीनी यात्रियों के विवरण

- इत्सिंग- यह 7वीं सदी के अंत में भारत में आया था। इसने अपने विवरण में नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथाअपने समय के भारत का वर्णन किया है।

- Itsing- It came to India in the late 7th century. In its description, it has described Nalanda University, Vikramshila University and India of its time.

अरब यात्रियों के विवरण

- अरब व्यापारियों तथा लेखकों के विवरणों से हमें पूर्व मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। इन लेखकों में अलबरूनी और इब्नबतूता का नाम सर्वप्रथम है।

- The descriptions of Arab traders and writers give us enough information about the early medieval Indian society and culture. The names of Alberuni and Ibn Battuta are the first among these writers.

unacademy

अलबरूनी

- यह 11वीं सदी में महमूद गज़नवी के साथ भारत आया था। अरबी में लिखी गई उसकी कृति 'तहकीक-ए-हिंद' 'किताबुल हिंद' (भारत की खोज) आज भी इतिहासकारों के लिये एक महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है।
- सर्वप्रथम 1888 ई. में एडवर्ड साची ने अरबी भाषा से'तहकीक-ए-हिंद' का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया।

- It came to India in the 11th century with Mahmud Ghaznavi. His work 'Tahqiq-e-Hind' 'Kitabul Hind' (Discovery of India) written in Arabic is still an important source for historians today.
- For the first time in 1888, Edward Saatchi translated 'Tahq-e-Hind' from Arabic language into English language.

अलबरूनी

- अरबी लेखकों में अलबरूनी के अतिरिक्त अल-बिलादुरी, सुलेमानहसन निज़ाम, फरिश्ता, निजामुद्दीन, इब्नबतूता आदि भी प्रमुख हैं।

- In addition to Alberuni among Arabic writers, Al-Bilduri, Suleimanhasan Nizam, Farishta, Nizamuddin, Ibn Battuta etc. are also prominent.

इब्नबतूता

- इसके द्वारा लिखा गया यात्रा-वृत्तांत 'रेहला' सर्वप्रमुख है, जो अरबीभाषा में रचित है। यह 14 वीं शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विषय में प्रचुर तथा सबसेरोचक जानकारियाँ देता है।
- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने उसे दिल्ली में काजी के पद परनियुक्त किया। बाद में उसे अपना राजदूत बनाकर चीन भेजा।

- The travelogue 'Rehla' written by him is the most important, which is composed in Arabic language. It gives rich and most interesting information about the social and cultural life of the Indian subcontinent in the 14th century.
- Sultan Muhammad bin Tughluq appointed him as Qazi in Delhi. Later he was sent to China as his ambassador.

unacademy

प्राचीन भारतीय इतिहास का विकास चार्ट

प्रागैतिहासिक काल

लक्षण

- लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं
- पुरातात्त्विक साक्ष्य उपलब्ध

उदाहरण–पाषाण काल

पुरापाषाण काल (प्रारंभ से 10,000 ई. पू.)

- निम्न पुरापाषाण काल (प्रारंभ से 1 लाख ई. पू.)
- मध्य पुरापाषाण काल (1 लाख ई. पू. – 40,000 ई. पू.)
- उच्च पुरापाषाण काल (40,000 ई. पू. – 10,000 ई. पू.)

मध्यपाषाण काल (10,000–5500 ई. पू.)

नवपाषाण काल (5,500–3,000 ई.पू.)

आद्य ऐतिहासिक काल

- लिखित साक्ष्य उपलब्ध परंतु लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।

उदाहरण सैंधव सभ्यता, वैदिक संस्कृति

ऐतिहासिक काल

- पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक दोनों साक्ष्य उपलब्ध
- यह काल पुरातात्त्विक, साहित्यिक तथा विदेशी यात्रियों के वर्णन पर निर्भर है।

पाषाण युग

- भारतीय पाषाणकालीन संस्कृति को विद्वानों ने तीन कालों में विभाजित किया है-पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल तथा नवपाषाण काल। पुरापाषाण संस्कृति का उदय अभिनूतन (Pleistocene) युग में हुआ था।

- Scholars have divided Indian Paleolithic culture into three periods – Palaeolithic, Mesolithic and Neolithic period. The Paleolithic culture arose in the Pleistocene era.

पाषाण युग

- इस युग में धरती बर्फ से ढकी हुई थी। भारतीय पुरापाषाण काल को उ मानव द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थर के औजारों के स्वरूप और जलवायु में होने वाले परिवर्तन के आधार पर तीन अवस्थाओं में बाँटा जाता है

- In this era the earth was covered with snow. The Indian Palaeolithic period is divided into three phases on the basis of the nature of stone tools used by humans and changes in climate.

पाषाण युग

1. निम्न पुरापाषाण काल (प्रारंभ से 1 लाख ई.पू.)

2. मध्य पुरापाषाण काल (1 लाख ई.पू. से 40,000 ई.पू.)

3. उच्च पुरापाषाण काल (40,000 ई.पू. से 10,000 ई.पू.)

- 1. Lower Palaeolithic (beginning to 1 lakh BC)
- 2. Middle Palaeolithic period (1 lakh BC to 40,000 BC)
- 3. Upper Palaeolithic (40,000 BC to 10,000 BC)

unacademy

प्रागैतिहासिक काल

पुरापाषाण काल

- पुरापाषाणकालीन संस्कृति के अवशेष सोहन नदी घाटी, बेलन नदी घाटी तथा नर्मदा नदी घाटी एवं भोपाल के पास भीमबेटका' नामक चित्रित शैलाश्रयों से प्राप्त हुए हैं।

- Remnants of Palaeolithic culture have been found from Sohan river valley, Belan river valley and Narmada river valley and painted rock shelters called 'Bhimbetka' near Bhopal.

unacademy

पुरापाषाण काल

- पूर्वपाषाण काल या पुरापाषाण काल को उपकरणों में भिन्नता के आधार पर तीन कालों में विभाजित किया गया है
- निम्न पुरापाषाण काल
- मध्य पुरापाषाण काल
- उच्च पुरापाषाण काल

- The Prelithic period or the Palaeolithic period is divided into three periods on the basis of the difference in tools
- Lower Palaeolithic
- Middle Palaeolithic
- Upper Palaeolithic

unacademy

निम्न पुरापाषाण काल

- इसके उपकरण सर्वप्रथम सोहन नदी (सिंधु नदी की छोटी सहायक नदी) घाटी से प्राप्त हुए, इसी कारण इसे 'सोहन संस्कृति' भी कहाजाता है।
- इस काल में पेबुल, चॉपर तथा चॉपिंग उपकरणों के साक्ष्य मिलते हैं।
- पेबुल, पत्थर के वे उपकरण होते थे, जो पानी के बहाव मेंरगड़ खाकर चिकने और सपाट हो जाते थे।

- Its tools were first obtained from the Sohan river (small tributary of the Indus river) valley, that is why it is also called 'Sohan culture'.
- Evidence of pebul, chopper and chopping equipment is found in this period.
- Pebules were stone tools that, when rubbed in the flow of water, became smooth and flat.

निम्न पुरापाषाण काल

- चॉपर, बड़े आकार वाला उपकरण है, जो पेबुल से बनायाजाता था।
- चॉपिंग उपकरण द्विधारी होते हैं अर्थात् पेबुल के ऊपर दोनों किनारों को छीलकर उनमें धार बनाई जाती थी।

- A chopper is a large tool that was made from a pebble.
- The chopping tools are double-edged i.e. the top of the pebule was peeled off on both sides to make a sharp edge.

मध्य पुरापाषाण काल

- इस काल में बहुसंख्यक कोर, फ्लेक तथा ब्लेड उपकरण प्राप्त हुए हैं। फलकों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाण काल को'फलक संस्कृति' की संज्ञा दी जाती है।
- मध्य पुरापाषाण काल के औज़ारों का निर्माण अच्छे प्रकार केक्वार्टज़ाइट पत्थर से किया गया है।

- The majority of core, flake and blade tools have been found in this period. Due to the abundance of faces, the Middle Palaeolithic period is called 'Pale culture'.
- Tools of the Middle Paleolithic period are made of fine quartzite stone.

मध्य पुरापाषाण काल

- मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण महाराष्ट्र में नेवासा, झारखण्ड में सिंहभूमि, उत्तर प्रदेश में चकिया (वाराणसी), बेलन घाटी (इलाहाबाद), मध्य प्रदेश के भीमबेटका गुफाओं तथा सोन घाटी, गुजरात में सौराष्ट्र क्षेत्र, हिमाचल में व्यास, वानगंगा तथा सिरसा घाटियों आदि विविध पुरास्थलों से प्राप्त होते हैं।

- Tools of Middle Palaeolithic period Nevasa in Maharashtra, Singhbhumi in Jharkhand, Chakia (Varanasi), Belan valley (Allahabad) in Uttar Pradesh, Bhimbetka caves and Son valley of Madhya Pradesh, Saurashtra region in Gujarat, Vyas, Wanganga and Sirsa valleys in Himachal etc. are obtained from various antiquities.

उच्च पुरापाषाण काल

- इस काल का प्रमुख पाषाणोपकरण ब्लेड (Blade) है। ब्लेड पतलेतथा सँकरे आकार वाला वह पाषाण फलक है जिसके दोनों किनारे समानांतर होते हैं तथातथा जो लंबाई में अपनी चौड़ाई से दोगुना होता है।

- The main stonework of this period is the Blade. The blade is a thin and narrow shaped stone face whose two sides are parallel and which is twice its width in length.

उच्च पुरापाषाण काल

- भारत में इस काल के उपकरण सोन घाटी (मध्य प्रदेश), सिंहभूमि(झारखण्ड), जोगदहा, भीमबेटका, रामपुर, बघेलान, बाघोर (मध्य प्रदेश), पटणे, भदणे तथा इनामगाँव (महाराष्ट्र), रेनीगुंटा, वेमुला, कुर्नूल गुफाएँ (आंध्र प्रदेश), शोरापुर दोआब (कर्नाटक) तथा बूढ़ा पुष्कर (राजस्थान) आदि से प्राप्त हुए हैं।

- Tools from this period in India Son Valley (Madhya Pradesh), Singhbhumi (Jharkhand), Jogdaha, Bhimbetka, Rampur, Baghelan, Baghor (Madhya Pradesh), Patna, Bhadne and Inamgaon (Maharashtra), Renigunta, Vemula, Kurnool Caves (Andhra Pradesh)), Shorapur Doab (Karnataka) and Budha Pushkar (Rajasthan) etc.

unacademy

मध्यपाषाण काल

- इस काल के उपकरण अत्यंत छोटे होते थे, इसलिये इन्हें 'माइक्रोलिथ'कहा गया।
- सर्वप्रथम सी.एल. कार्लाइल ने विंध्य क्षेत्र से लघु पाषाणोपकरण खोजे।
- इस काल के प्रमुख केंद्र हैं- बेतवा घाटी, सोन घाटी (मध्य प्रदेश),कृष्णा घाटी (कर्नाटक), बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश), नेवासा (महाराष्ट्र)इत्यादि। •

- The tools of this period were very small, hence they were called 'microliths'.
- First C.L. Carlyle discovered minor lithography from the Vindhya region.
- The major centers of this period are Betwa Valley, Son Valley (Madhya Pradesh), Krishna Valley (Karnataka), Belan Valley (Uttar Pradesh), Nevasa (Maharashtra) etc. ,

unacademy

मध्यपाषाण काल

- आदमगढ़ (मध्य प्रदेश) और बागोर (राजस्थान) से प्राप्त साक्ष्यपशुपालन को दर्शाते हैं। इस काल के लोगों ने सर्वप्रथम कुत्ते कोपालतू पशु बनाया था।
- इस काल में मानव अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़(उत्तर प्रदेश) के सराय नाहर राय तथा महदहा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।

- Evidence from Adamgarh (Madhya Pradesh) and Bagor (Rajasthan) shows animal husbandry. The people of this period first made the dog as a pet.
- In this period, the first remains of human skeleton have been found from the place named Sarai Nahar Rai and Mahdaha of Pratapgarh (Uttar Pradesh).

मध्यपाषाण काल

- राजस्थान में स्थित सांभर झील निक्षेप के कई मध्य पाषाणिक स्थलप्राप्त हुए हैं। यहाँ से विश्व के सबसे पुराने वृक्षारोपण का साक्ष्य मिला है।

- Many Mesolithic sites of the Sambhar Lake deposit located in Rajasthan have been found. Evidence of the world's oldest plantation has been found from here.

नवपाषाण काल

- भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीनतम नवपाषाणिक बस्ती मेहरगढ़ (पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित) है, जिसकी तिथि 7000 ई. पू. मानी जाती है।
- इस काल के प्रमुख केंद्र हैं- बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश), रेनीगुंटा(आंध्र प्रदेश), सोन घाटी (मध्य प्रदेश), सिंहभूमि (झारखंड) इत्यादि।

- The oldest Neolithic settlement in the Indian subcontinent is Mehrgarh (located in the Balochistan province of Pakistan), which dates back to 7000 BC. is considered.
- The major centers of this period are Belan Valley (Uttar Pradesh), Renigunta (Andhra Pradesh), Son Ghati (Madhya Pradesh), Singhbhumi (Jharkhand) etc.

unacademy

नवपाषाण काल

- नवपाषाणकालीन स्थल बुर्ज़होम एवं गुफकराल से अनेक गावास,मृद्भांड एवं हड्डी के औज़ार प्राप्त हुए हैं।
- चिरॉंद (बिहार) से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण पाये गएजो मुख्य रूप से हिरण के सींगों के हैं।कोल्डिहवा (इलाहाबाद) से चावल का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

- Many caves, pottery and bone tools have been found from the Neolithic sites Burzahom and Gufkaral.
- An abundance of bone tools were found from Chirand (Bihar), mainly of deer horns. The earliest evidence of rice has been found from Koldihwa (Allahabad).

नवपाषाण काल

- नवपाषाणिक संस्कृति अपनी पूर्वगामी संस्कृतियों की अपेक्षा अधिकविकसित थी। इस काल का मानव न केवल खाद्य पदार्थों का उपभोक्ता था, वरन् उत्पादक भी था। वह कृषि कर्म और पशुपालनसे पूर्णतः परिचित हो चुका था।
- यहाँ पाये गए उपकरणों में कुल्हाड़ी, बँसुली, छेनी, खुरपी, कुदाल,हथौड़े आदि प्रमुख हैं।

- The Neolithic culture was more developed than its predecessors. The man of this period was not only a consumer of food, but he was also a producer. He had become fully acquainted with agriculture and animal husbandry.
- The tools found here include axes, flutes, chisels, hooves, spades, hammers, etc.

unacademy

आद्य ऐतिहासिक काल

- पाषाण युग की समाप्ति के बाद धातुओं के युग का प्रारम्भ हुआ।इसी युग को आद्य ऐतिहासिक काल या धातु काल कहा जाता है।
- हड़प्पा संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति की गणना इस काल से कीजाती है।
- गैरिक एवं कृष्ण लोहित मृद्भाड इस काल से संबंधित हैं।

- After the end of the Stone Age, the era of metals started. This era is called the Proto-historic period or Metal period.
- Harappan culture and Vedic culture are counted from this period.
- Garrick and Krishna Lohit pottery belong to this period.

unacademy

ईसा पूर्व एवं ईसवी



- वर्तमान में प्रचलित ग्रेगोरियन कैलेंडर (ईसाई कैलेंडर/जूलियन कैलेंडर) ईसाई धर्मगुरु ईसा मसीह के जन्म-वर्ष (कल्पित) पर आधारित है। ईसा मसीह के जन्म के पहले के समय को ईसा-पूर्व (B.C.- Before the birth of Jesus Christ) कहा जाता है। इसमें वर्षों की गिनती उल्टी दिशा में होती है।

- The Gregorian calendar (Christian calendar/Julian calendar) currently in use is based on the year of birth (hypothetical) of the Christian theologian. The time before the birth of Jesus Christ is called B.C.-Before the birth of Jesus Christ. In this, the years are counted in the opposite direction.

ईसा पूर्व एवं ईसवी

- ईसा मसीह की जन्म-तिथि से आरंभ हुआ सन् ईसवी सन् कहलाता है, इसके लिये संक्षेप में ई. लिखा जाता है। ई. को लैटिन भाषा के शब्द A.D (Anno-Domini) में भी लिखा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- In the year of Lord (Jesus Christ)

- The year beginning with the date of birth of Jesus Christ is called AD, for this it is written in short AD. AD is also written in the Latin language word A.D (Anno-Doni), which literally means - In the year of Lord (Jesus Christ)

ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ

- इस काल में मनुष्य पत्थर एवं तांबे के उपकरण/औजार प्रयोग करने लगा था, इसी कारण इस काल को 'ताम्रपाषाण काल' कहते हैं।
- लगभग 5000 ई.पू. में मनुष्य ने सर्वप्रथम जिस धातु का प्रयोग किया, वह तांबा था।
- ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ कृषक ग्रामीण संस्कृतियाँ थीं। इस काल की प्रमुख संस्कृतियाँ हैं

- During this period man had started using tools/tools of stone and copper, that is why this period is called 'Chalcolithic period'.
- around 5000 BC The first metal used by man was copper.
- Chalcolithic cultures were agricultural rural cultures. The main cultures of this period are

unacademy

बनास/अहाड़

- संस्कृति (राजस्थान) प्रमुख स्थल -अहाड़, बालाथल तथा गिलुंद। अहाड़ को 'ताम्बवती' भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ बड़े पैमाने पर तांबा मिलता था। इस संस्कृति का कालक्रम 2100-1500 ई. पू. के बीच रखा गया है।

- Culture (Rajasthan) Major sites - Ahar, Balathal and Gilund. Ahad is also called 'Tambavati' because copper was found on a large scale here. The chronology of this culture dates back to 2100-1500 BC. placed in between.

unacademy

बनास/अहाड़

- अहाड़ के लोग पत्थर के बने घरों में रहते थे।
- गिलुंद इस संस्कृति का स्थानीय केंद्र माना गया है। यहाँ से पकीईटों के निर्माण के साक्ष्य मिले हैं।
- यहाँ से तांबे की बनी कुल्हाड़ियाँ, चूड़ियाँ तथा चादरें प्राप्त हुई हैं।

- The people of Ahar lived in houses made of stone.
- Gilund is considered to be the local center of this culture. Evidence of the manufacture of paky bricks has been found from here.
- Axes, bangles and sheets made of copper have been found from here.

unacademy

कायथा संस्कृति (मध्य प्रदेश)

- प्रमुख स्थल कायथा तथा एरण। कायथा के मृद्भांडों पर प्राक्-हड़प्पन, हड़प्पन और हड़प्पोत्तर संस्कृतिका प्रभाव दिखाई देता है।
- यहाँ से स्टेटाइट और कॉर्नेलियन जैसे कीमती पत्थरों के हार प्राप्तहुए हैं।
- नोट: एरण अभिलेख से सती प्रथा के प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य मिले हैं।

- The main sites are Kayatha and Eran. The influence of pre-Harappan, Harappan and post-Harappan culture is visible on the pottery of Kayatha.
- Necklaces of precious stones like statite and cornelian have been obtained from here.
- Note: The first archival evidence of the practice of Sati has been found from the Eran record.

मालवा संस्कृति

- प्रमुख स्थल कायथा, एरण तथा नवदाटोली।
- मालवा मृद्भांड अपनी उत्कृष्टता के लिये जाने जाते हैं।
- नवदाटोली से विभिन्न कृषि फसलों के साक्ष्य मिले हैं।

- The main places are Kayatha, Eran and Navdatoli.
- Malwa pots are known for their excellence.
- Evidence of various agricultural crops has been found from Navdatoli.

जोरवे संस्कृति (महाराष्ट्र)

- प्रमुख स्थल जोरवे, नेवासा, दैमाबाद तथा इनामगाँव।
- दैमाबाद से भारी मात्रा में काँसे की वस्तुएँ मिली हैं। यह हड़प्पा संस्कृति का प्रभाव दिखलाती है। यहीं से गैंडा, हाथी, भैंसा तथा रथचलाते हुए मनुष्य की आकृति मिली है।

- Major places Jorwe, Nevasa, Daimabad and Inamgaon.
- A large amount of bronze items have been found from Daimabad. It shows the influence of Harappan culture. From here the figure of a man driving a rhinoceros, elephant, buffalo and chariot has been found.

जोरवे संस्कृति (महाराष्ट्र)

- इनामगाँव ताम्रपाषाण युग की एक बड़ी बस्ती थी। यह बस्ती किलाबंद और खाई से घिरी हुई थी।
- 1200 ई. पू. के लगभग ताम्र पाषाणिक संस्कृति का लोप हो गया,केवल जोरवे संस्कृति 700 ई. पू. तक जीवित रही।
- ताम्र पाषाण संस्कृति के विलुप्त होने का कारण बहुत कम वर्षा यासूखा था।

- Inamgaon was a large settlement of the Chalcolithic age. This settlement was fortified and surrounded by moat.
- 1200 BC The Chalcolithic culture disappeared around AD 700, only the Jorwe culture. lived till
- The reason for the extinction of the Chalcolithic culture was very little rainfall or drought.



काल	संस्कृति के लक्षण	मुख्य स्थल	महत्व, उपकरण एवं विशेषताएँ
निम्न पुरापाषाण काल	शल्क, गँडासा, खंडक उपकरण संस्कृति	पंजाब, कश्मीर, सोहन घाटी, सिंगरौली घाटी, छोटा नागपुर, नर्मदा घाटी, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश	हस्तकुठार एवं कटिकाश्म उपकरण, होमोइरेक्टस अस्थि अवशेष नर्मदा घाटी से प्राप्त हुए हैं।
मध्य पुरापाषाण काल	फलक संस्कृति	नेवासा (महाराष्ट्र), डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्य प्रदेश), बाँकुड़ा, पुरुलिया (पश्चिम बंगाल)	फलक, बेधनी, खुरचनी; भीमबेटका से गुफा चित्रकारी मिली है।
उच्च पुरापाषाण काल	अस्थि, खुरचनी एवं तक्षणी संस्कृति	बेलन घाटी, छोटा नागपुर पठार, मध्य भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश	प्रारंभिक होमोसेपियन्स मानव का काल, हार्पुन, फलक व हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं।
मध्यपाषाण काल	सूक्ष्म पाषाण संस्कृति	आदमगढ़, भीमबेटका (मध्य प्रदेश), बागोर (राजस्थान), सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश)	सूक्ष्मपाषाण उपकरण बनाने की तकनीक का विकास, अर्द्धचंद्राकार उपकरण, इकधार फलक, स्थायी निवास का साक्ष्य, पशुपालन।
नवपाषाण काल	पॉलिशड उपकरण संस्कृति	बुर्जहोम और गुफकराल (कश्मीर), लंघनाज (गुजरात), दमदमा, कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश), चिरांद (बिहार), सोचमपल्ली (तमिलनाडु), मास्की (कर्नाटक)	प्रारंभिक कृषि संस्कृति, कपड़ा बुनना, भोजन पकाना, मृदभांड निर्माण, मनुष्य स्थायी निवासी बना, पाषाण उपकरणों का पॉलिश शुरू, पहिया, अग्नि का प्रचलन।

महापाषाण काल

- नवपाषाण युग की समाप्ति के बाद दक्षिण में जिस संस्कृति का उदय हुआ, उसे महापाषाण काल कहा जाता है।
- पत्थर की कब्रों को 'महापाषाण' कहा जाता था। इन कब्रों में मानवों को दफनाया जाता था। महापाषाण काल से संबद्ध लोग साधारणतः पहाड़ों की ढलान पर रहते थे।

- The culture that emerged in the south after the end of the Neolithic Age is called the Megalithic Age.
- Stone tombs were called 'megaliths'. Humans were buried in these tombs. The people belonging to the megalithic period generally lived on the slopes of the mountains.

unacademy

महापाषाण काल

- दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्वी भारत तथा कश्मीर में यह प्रथा प्रचलित थी। यहाँ की कब्रों में लोहे के औजार, घोड़े के कंकाल तथा पत्थर एवं सोनेके गहने भी प्राप्त हुए हैं।
- महापाषाण काल में आंशिक शवाधान की पद्धति भी प्रचलित थी जिसके तहत शवों को जंगली जानवरों के खाने के लिये छोड़ दिया जाता था।

- This practice was prevalent in the Deccan, South India, North-East India and Kashmir. Iron tools, horse skeletons and stone and gold ornaments have also been found in the tombs here.
- Partial cremation was also prevalent in the megalithic period, under which dead bodies were left for wild animals to eat.

महापाषाण काल

- ब्रह्मगिरि, आदिचन्नलूर, मास्की, चिंगलपत्तु, नागार्जुनकोंडा आदि इसके प्रमुख शवाधान केंद्र हैं। महापाषाणकालीन लोग धान के अतिरिक्त रागी की खेती भी करते थे। इतिहासकारों ने महापाषाण काल का निर्धारण 1000 ई. पू. से लेकर प्रथम शताब्दी ई. पू. के बीच किया है।

- Its main burial centers are Brahmagiri, Adichannalur, Maski, Chingalpattu, Nagarjunakonda etc. The megalithic people used to cultivate ragi in addition to paddy. Historians have determined the megalithic period in 1000 BC. From the first century BC to done in between.

अभ्यास प्रश्न

1. बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी है, जो

(a) अजंता में है

(b) बादामी में है

(c) बाघ में है

(d) एलोरा में है

1. The picture of the Bodhisattva Padmapani is the most famous and often painted painting, which

- (a) at Ajanta
- (b) Badami
- (c) is in the tiger
- (d) Ellora

unacademy

अभ्यास प्रश्न

1. बोधिसत्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रायः चित्रित चित्रकारी है, जो

(a) अजंता में है

(b) बादामी में है

(c) बाघ में है

(d) एलोरा में है

unacademy

अभ्यास प्रश्न

2. विंध्य क्षेत्र के किस शिलाश्रय से सर्वाधिक मानव कंकाल मिले हैं?'

(a) मोरहना पहाड़

(b) घघरिया

(c) बघही खोर

(d) लेखहिया

- 2. From which rock shelter of Vindhya region, maximum human skeletons have been found?'
- (a) Morhana mountain
- (b) Ghagharias
- (c) Baghi Khor
- (d) Writer

unacademy

अभ्यास प्रश्न

2. विंध्य क्षेत्र के किस शिलाश्रय से सर्वाधिक मानव कंकाल मिले हैं?'

(a) मोरहना पहाड़

(b) घघरिया

(c) बघही खोर

(d) लेखहिया

unacademy

अभ्यास प्रश्न

3. एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल निकले हैं

(a) सराय नाहर राय से

(b) दमदमा से

(c) महदहा से

(d) लंघनाज से

- 3. Three human skeletons have emerged from the same grave
- (a) Sarai Nahar Rai
- (b) from asthma
- (c) Mahdaha
- (d) Langhnaz

unacademy

अभ्यास प्रश्न

3. एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल निकले हैं

(a) सराय नाहर राय से

(b) दमदमा से

(c) महदहा से

(d) लंघनाज से

अभ्यास प्रश्न

4. हड्डी से निर्मित आभूषण भारत में मध्य पाषाण काल के संदर्भ में कहाँ से प्राप्त हुए हैं?

(a) सराय नाहर राय से

(b) महदहा से

(c) लेखहिया से

(d) चोपानी मांडो से

4. From where are the ornaments made of bone obtained with reference to the Mesolithic period in India?

- (a) Sarai Nahar Rai
- (b) Mahdaha
- (c) Lekhia
- (d) Chopani Mando

unacademy

अभ्यास प्रश्न

4. हड्डी से निर्मित आभूषण भारत में मध्य पाषाण काल के संदर्भ में कहाँ से प्राप्त हुए हैं?

(a) सराय नाहर राय से

(b) महदहा से

(c) लेखहिया से

(d) चोपानी मांडो से

अभ्यास प्रश्न

5. भीमबेटका कहाँ स्थित है?

(a) भोपाल

(b) पंचमढ़ी

(c) सिंगरौली

(d) अब्दुल्लागंज रायसेन

5. Where is Bhimbetka located?

- (a) Bhopal
- (b) Pachmarhi
- (c) Singrauli
- (d) Abdullahganj Raisen

unacademy

अभ्यास प्रश्न

5. भीमबेटका कहाँ स्थित है?

(a) भोपाल

(b) पंचमढ़ी

(c) सिंगरौली

(d) अब्दुल्लागंज रायसेन

अभ्यास प्रश्न

6. भीमबेटका किसके लिये प्रसिद्ध है?

(a) गुफाओं के लिये शैलचित्र

(b) खनिज

(c) बौद्ध प्रतिमाएँ

(d) सोन नदी का उपागम स्थल

6. What is Bhimbetka famous for?

- (a) Rock paintings for caves
- (b) Minerals
- (c) Buddhist images
- (d) the source of Son river

अभ्यास प्रश्न

6. भीमबेटका किसके लिये प्रसिद्ध है?

(a) गुफाओं के लिये शैलचित्र

(b) खनिज

(c) बौद्ध प्रतिमाएँ

(d) सोन नदी का उपागम स्थल

unacademy

अभ्यास प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किस स्थान पर मानव के साथ कुत्ते को दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है?

(a) बुर्ज़होम

(b) कोल्डिहवा

(c) चोपानी मांडो

(d) माण्डो

7. At which of the following places has evidence of a dog buried along with a human been found?

(a) Burzahom

(b) Koldihwa

(c) Chopani Mando

(d) Mando

unacademy

अभ्यास प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किस स्थान पर मानव के साथ कुत्ते को दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है?

(a) बुर्ज़होम

(b) कोल्डिहवा

(c) चोपानी मांडो

(d) माण्डो

अभ्यास प्रश्न

8. भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य कहाँ मिलता है?

(a) नीलगिरि पहाड़ियाँ

(b) शिवालिक पहाड़ियाँ

(c) नल्लमला पहाड़ियाँ

(d) नर्मदा घाटी

8. Where is the first evidence of human being found in India?

- (a) Nilgiri Hills
- (b) Shivalik Hills
- (c) Nallamala Hills
- (d) Narmada Valley

unacademy

अभ्यास प्रश्न

8. भारत में मानव का सर्वप्रथम साक्ष्य कहाँ मिलता है?

(a) नीलगिरि पहाड़ियाँ

(b) शिवालिक पहाड़ियाँ

(c) नल्लमला पहाड़ियाँ

(d) नर्मदा घाटी

अभ्यास प्रश्न

9. भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण निम्नलिखित विभागों/मंत्रालयों में से किसकासंलग्न कार्यालय है?

(a) संस्कृति

(b) पर्यटन

(c) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

(d) मानव संसाधन विकास

9. Archaeological Survey of India is the attached office of which of the following Departments/Ministries?

- (a) Culture
- (b) tourism
- (c) Science and Technology
- (d) Human Resource Development

unacademy

अभ्यास प्रश्न

9. भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण निम्नलिखित विभागों/मंत्रालयों में से किसकासंलग्न कार्यालय है?

(a) संस्कृति

(b) पर्यटन

(c) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

(d) मानव संसाधन विकास

अभ्यास प्रश्न

10. निम्नलिखित में से किसको 'चालकोलिथिक युग' भी कहा जाताहै?

(a) पुरापाषाण युग

(b) नवपाषाण युग

(c) ताम्रपाषाण युग

(d) लौहयुग

10. Which of the following is also known as 'Chalcolithic Age'?

- (a) Palaeolithic Age
- (b) Neolithic Age
- (c) Chalcolithic Age
- (d) Iron Age

unacademy

अभ्यास प्रश्न

10. निम्नलिखित में से किसको 'चालकोलिथिक युग' भी कहा जाताहै?

(a) पुरापाषाण युग

(b) नवपाषाण युग

(c) ताम्रपाषाण युग

(d) लौहयुग

अभ्यास प्रश्न

11. निम्नलिखित में से कौन-सा वेद गद्य और पद्य दोनों में रचित है?

(a) ऋग्वेद

(b) यजुर्वेद

(c) सामवेद

(d) अथर्ववेद

11. Which of the following Vedas is composed in both prose and verse?

- (a) Rigveda
- (b) Yajurveda
- (c) Samaveda
- (d) Atharvaveda

unacademy

अभ्यास प्रश्न

11. निम्नलिखित में से कौन-सा वेद गद्य और पद्य दोनों में रचित है?

(a) ऋग्वेद

(b) यजुर्वेद

(c) सामवेद

(d) अथर्ववेद

unacademy

अभ्यास प्रश्न

12. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं?

(a) कोल्डिहवा से

(b) लहुरादेव से

(c) मेहरगढ़ से

(d) टोकवा से

- 12. The earliest evidence of agriculture has been found in the Indian subcontinent?
- (a) Koldihwa
- (b) Lahuradeo
- (c) Mehrgarh
- (d) Tokwa

अभ्यास प्रश्न

12. भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं?

(a) कोल्डिहवा से

(b) लहुरादेव से

(c) मेहरगढ़ से

(d) टोकवा से

unacademy

अभ्यास प्रश्न

9. सिंधु घाटी सभ्यता गैर-आर्य थी, क्योंकि

(a) वह नगरीय सभ्यता थी।

(b) उसकी अपनी लिपि थी।

(c) उसकी खेतिहर अर्थव्यवस्था थी।

(d) उसका विस्तार नर्मदा घाटी तक था।

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

9. सिंधु घाटी सभ्यता गैर-आर्य थी, क्योंकि

(a) वह नगरीय सभ्यता थी।

(b) उसकी अपनी लिपि थी।

(c) उसकी खेतिहर अर्थव्यवस्था थी।

(d) उसका विस्तार नर्मदा घाटी तक था।

- 9. Indus Valley Civilization was non-Aryan because
- (a) It was an urban civilization.
- (b) He had his own script.
- (c) It had an agricultural economy.
- (d) It extended till Narmada valley.

अभ्यास प्रश्न

8. स्थापित सिंधु घाटी सभ्यता जिन नदियों के तट पर बसी थी, वे कौन-सी थी?

1. सिंधु 2. चेनाब

3. झेलम 4. गंगा

कूट: (a) 1 और 2 (b) 1,2 और 3

(c) 2,3 और 4 (d) 1,2,3 और 4

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

8. स्थापित सिंधु घाटी सभ्यता जिन नदियों के तट पर बसी थी, वे कौन-सी थी?

1. सिंधु 2. चेनाब

3. झेलम 4. गंगा

कूट: (a) 1 और 2 (b) 1,2 और 3

(c) 2,3 और 4 (d) 1,2,3 और 4

- 8. What were the rivers on which the established Indus Valley Civilization was settled?
- 1. Sindhu 2. Chenab
- 3. Jhelum 4. Ganga
- Codes: (a) 1 and 2 (b) 1,2 and 3
- (c) 2,3 and 4 (d) 1,2,3 and 4

अभ्यास प्रश्न

7. एक उन्नत जल-प्रबंधन व्यवस्था का साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है?

(a) आलमगीरपुर से

(b) धौलावीरा से

(c) कालीबंगा से

(d) लोथल से

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

7. एक उन्नत जल-प्रबंधन व्यवस्था का साक्ष्य कहाँ से प्राप्त हुआ है?

(a) आलमगीरपुर से

.(b) धौलावीरा से

(c) कालीबंगा से

(d) लोथल से

- 7. From where has the evidence of an improved water management system been found?
- (a) Alamgirpur
- .(b) Dholavira
- (c) Kalibanga
- (d) Lothal

अभ्यास प्रश्न

6. वह हड़प्पाकालीन नगर, जिसका प्रतिनिधित्व लोथल का पुरातत्त्व स्थल करता है, किस नदी पर स्थित था?

(a) नर्मदा

(b) माही

(c) भोगवा

(d) भीमा

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

6. वह हड़प्पाकालीन नगर, जिसका प्रतिनिधित्व लोथल का पुरातत्त्व स्थल करता है, किस नदी पर स्थित था?

(a) नर्मदा

(b) माही

(c) भोगवा

(d) भीमा

- 6. On which river was the Harappan city, represented by the archaeological site of Lothal, situated?
- (a) Narmada
- (b) Mahi
- (c) Bhogwa
- (d) Bhima

अभ्यास प्रश्न

5. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हड़प्पा का बंदरगाह है?

(a) सिकंदरिया

(b) लोथल

(c) महास्थानगढ़(

d) नागपट्टनम्

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

5. निम्नलिखित में से कौन-सा एक हड़प्पा का बंदरगाह है?

(a) सिकंदरिया

(b) लोथल

(c) महास्थानगढ़(

d) नागपट्टनम्

- 5. Which one of the following is a Harappan port?
- (a) Alexandria
- (b) Lothal
- (c) Mahasthangarh(
- d) Nagapattinam

अभ्यास प्रश्न

4. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के उत्खनन सेसंबंधित नहीं है?

(a) आर.डी. बनर्जी

(b) के.एन. दीक्षित

(c) एम.एस. वत्स

(d) वी.ए. स्मिथ

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

unacademy

अभ्यास प्रश्न

4. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के उत्खनन सेसंबंधित नहीं है?

(a) आर.डी. बनर्जी

(b) के.एन. दीक्षित

(c) एम.एस. वत्स

(d) वी.ए. स्मिथ

- 4. Which of the following is not related to the excavations of Harappa and Mohenjodaro?
- (a) R.D. Banerjee
- (b) KN Dixit
- (c) M.S. Child
- (d) V.A. smith

अभ्यास प्रश्न

3. निम्नलिखित पशुओं में से किस एक का हड़प्पा संस्कृति में पाई गईमुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण (Representation) नहीं हुआ है?

a) गाय..

(b) हाथी

(c) गैंडा(

(d) बाघ

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

unacademy

अभ्यास प्रश्न

3. निम्नलिखित पशुओं में से किस एक का हड़प्पा संस्कृति में पाई गईमुहरों और टेराकोटा कलाकृतियों में निरूपण (Representation) नहीं हुआ है?

a) गाय..

(b) हाथी

(c) गैंडा(

(d) बाघ

- 3. Which one of the following animals is not represented in the seals and terracotta artefacts found in the Harappan culture?
- a) Cow..
- (b) Elephant
- (c) Rhinoceros(
- (d) tiger

अभ्यास प्रश्न

2. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिंधु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण है/हैं?

1. उनके विशाल महल और मंदिर होते थे।

2. वे देवी और देवताओं दोनों की पूजा करते थे।

3. वे युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे गए रथों का प्रयोग करते थे।

(a) 1 और 2 (b) केवल 2

(c) 1,2 और 3 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

अभ्यास प्रश्न

2. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिंधु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण है/हैं?

1. उनके विशाल महल और मंदिर होते थे।

2. वे देवी और देवताओं दोनों की पूजा करते थे।

3. वे युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे गए रथों का प्रयोग करते थे।

(a) 1 और 2 (b) केवल 2

(c) 1,2 और 3 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

- 2. Which of the following character(s) is/are the correct depiction of the people of Indus Civilization?
- 1. They had huge palaces and temples.
- 2. They worshiped both gods and goddesses.
- 3. They used chariots drawn by horses in battle.
- (a) 1 and 2 (b) 2 only
- (c) 1, 2 and 3 (d) none of the above

अभ्यास प्रश्न

1. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथनसत्य है/हैं?

1. यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी। यद्यपि इसमें धार्मिक तत्त्वउपस्थित थे, पर वे वर्चस्वशाली नहीं थे।

2. उस काल में भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।

- कूट: (a) केवल 1 (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

unacademy

अभ्यास प्रश्न

1. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथनसत्य है/हैं?

1. यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी। यद्यपि इसमें धार्मिक तत्त्वउपस्थित थे, पर वे वर्चस्वशाली नहीं थे।

2. उस काल में भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।

- कूट: (a) केवल 1 (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

- 1. Which of the following statement(s) is/are true with respect to the Indus Valley Civilization?

- 1. It was primarily a cosmic civilization. Although religious elements were present in it, they were not dominant.

- 2. During that period, clothes were made from cotton in India.

- Code: (a) 1 only (b) 2 only
- (c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

unacademy

सैंधव सभ्यता की देन

- सैंधव सभ्यता की एक प्रमुख देन नगरीय जीवन के क्षेत्र में है। पूर्ण विकसित नगरीय जीवन का सूत्रपात इसी सभ्यता से हुआ।

- A major contribution of the Indus civilization is in the field of urban life. Fully developed urban life originated from this civilization.

unacademy

सैंधव सभ्यता की देन

- शिव पूजा, लिंग एवं योनि पूजा, योग का प्रचलन, जल का धार्मिक महत्त्व, स्वास्तिक, चक्र आदि प्रतीक के रूप में ताबीज, तंत्र-मंत्र का प्रयोग, आभूषणों का प्रयोग, बहुफसली कृषि व्यवस्था, अग्नि पूजा या यज्ञ, मुहरों का उपयोग, इक्कागाड़ी एवं बैलगाड़ी, आंतरिक एवं बाह्यव्यापार आदि।

- Shiva worship, linga and yoni worship, practice of yoga, religious importance of water, swastika, chakra etc. as symbols, amulets, use of tantra-mantras, use of ornaments, multi-cropped farming system, fire worship or yagya, use of seals, Ikka cart and bullock cart, internal and external trade etc.

unacademy

सैंधव सभ्यता की देन

- सैंधव सभ्यता में प्रचलित अनेक चीजें ऐतिहासिक काल में भी निरंतर रहीं।
- इसके कुछ प्रमुख उदाहरण हैं- दशमलव पद्धति पर आधारित माप-तौल प्रणाली, नगर नियोजन, सड़कें एवं नालियों की व्यवस्था, बहुदेववाद का प्रचलन, मातृदेवी की पूजा, प्रकृति पूजा,।

- Many things prevalent in the Indus civilization remained constant even in the historical period.
- Some of the prominent examples of this are- measurement-weight system based on decimal system, town planning, arrangement of roads and drains, practice of polytheism, worship of mother goddess, nature worship, etc.

पतन से संबंधित विद्वानों के मत

विद्वान	पतन के कारण
गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर	बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण
जॉन मार्शल अर्नेस्ट मैके एवं एस.आर. राव	बाढ़
ऑरिल स्टेइन, अमलानंद घोष |	जलवायु परिवर्तन
एम.आर. साहनी	भूतात्त्विक परिवर्तन/जलप्लावन
जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता
के.यू.आर. कनेडी	प्राकृतिक आपदा (मलेरिया, महामारी)

सिंधु सभ्यता के पतन के कारण

- अंततः द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया। इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुँच गयी।

- Finally the second millennium BC. In the middle of this civilization was completely destroyed. There was a gradual decline of this civilization and it reached from urban civilization to rural civilization.

unacademy

सिंधु सभ्यता के पतन के कारण

- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति की तरह ही इसके पतन के लिये कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं था। इस सभ्यता के प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से यह पता चलता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रही।

- Like the origin of the Harappan civilization, no single cause was responsible for its decline. The study of the ancient remains of this civilization shows that it was in decline in its last days.

धार्मिक जीवन

- इनके धार्मिक दृष्टिकोण का आधार इहलौकिक तथा व्यावहारिक अधिकथा। मूर्ति पूजा का आरंभ संभवतः सैंधव सभ्यता से ही होता है।
- हड़प्पा से प्राप्त एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है।

- The basis of his religious outlook was more secular and practical. Idol worship probably begins with the Indus civilization itself.
- A plant from the womb of a Harappan terracotta is shown, symbolizing the goddess of fertility.

unacademy

धार्मिक जीवन

- कालीबंगा से प्राप्त अग्निकुंड के साक्ष्य के आधार पर कहा जा सकता है कि अग्नि तथा स्वास्तिक आदि की पूजा की जाती थी। स्वास्तिक और चक्र सूर्य पूजा के प्रतीक थे।
- सैंधववासी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, इसलिये मृत्यु के बाद दाह संस्कार के तीन तरीके प्रचलित थे- पूर्ण शवाधान, आंशिक शवाधान एवं कलश शवाधान।

- On the basis of the evidence of the fire pit obtained from Kalibanga, it can be said that the worship of fire and swastika etc. was done. The swastika and the chakra were symbols of sun worship.
- The Saindhavas believed in reincarnation, so three methods of cremation were prevalent after death - complete cremation, partial cremation and Kalash cremation.

unacademy

धार्मिक जीवन

- ये लोग मातृदेवी, रुद्र देवता (पशुपति नाथ), लिंग-योनि आदि की पूजा करते थे। इसके अलावा सैंधववासी वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी इत्यादि की भी पूजा करते थे।
- विशाल स्नानागार का प्रयोग संभवतः धार्मिक अनुष्ठान तथा सूर्य पूजा में होता होगा।

- These people worshiped Mother Goddess, Rudra Devta (Pashupati Nath), Linga-Yoni etc. Apart from this, the people of Sandhav also worshiped trees, animals, snakes, birds etc.
- The huge bath might have been used for religious rituals and sun worship.

unacademy

धार्मिक जीवन

- सैंधव निवासी ईश्वर की पूजा मानव, वृक्ष एवं पशु तीनों रूपों में करते थे। इस सभ्यता के लोग भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र आदि में विश्वास करते थे।
- ताबीजों के आधार पर जादू-टोने में विश्वास करने तथा कुछ जगहों की मुहरों (जैसे-चन्हूदड़ो में) पर बलि प्रथा के दृश्य अंकित होने के आधार पर बलि प्रथा का भी अनुमान लगाया जाता है।

- Inhabitants worshiped God in all the three forms of human, tree and animal. The people of this civilization believed in ghosts, ghosts, tantra-mantras etc.
- On the basis of amulets, the belief in witchcraft and some places (such as in Chanhudaro) are inscribed with scenes of sacrificial rituals.

unacademy

आर्थिक जीवन

- कृषि उन्नति के साथ पशुपालन का भी विकास हुआ था। कृषि कार्यों एवं व्यापार तथा परिवहन में पशुओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।
- पशुओं में- कूबड़ वाले बैल, भेड़, बकरी, हाथी, भैंस, गाय, गधे, सुअर व कुत्ते आदि के होने का अनुमान है।
- गुजरात के निवासी हाथी पालते थे।

- With the advancement of agriculture, animal husbandry also developed. Animals played an important role in agriculture, trade and transport.
- Among the animals - humped bulls, sheep, goats, elephants, buffaloes, cows, donkeys, pigs and dogs are estimated to be there.
- The residents of Gujarat used to keep elephants.

unacademy

आर्थिक जीवन

- कृषि कार्य हेतु प्रस्तर (पत्थर) एवं काँसे के औजारों का प्रयोगकिया जाता था। इस सभ्यता में फावड़ा या फाल नहीं मिला हैसंभवतः ये लोग लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे।
- सैंधव नगरों में कृषि पदार्थों की आपूर्ति ग्रामीण क्षेत्रों से होती थी,इसलिये अन्नागार नदियों के किनारे बनाए गए थे।

- Stone and bronze tools were used for agricultural work. No shovel or fall has been found in this civilization. Probably these people used wooden plows.
- In the Sandhav towns, the supply of agricultural commodities came from the rural areas, so granaries were built on the banks of the rivers.

आर्थिक जीवन

- इस सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, मटर, तिल, सरसों, कपास आदिकी खेती किया करते थे। सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोगों को दिया जाता है।
- यूनानियों ने इसे 'सिंडन' (सिडोन) नाम दिया है। ये लोग तरबूज, खरबूज़, नारियल, अनार, नींबू, केला जैसे फलों से भी परिचित थे। यहाँ के प्रमुख खाद्यान्न गेहूँ तथा जौ थे।

- The people of this civilization used to cultivate wheat, barley, rye, peas, sesame, mustard, cotton etc. The people of Indus Civilization are credited with producing the first cotton.
- The Greeks named it 'Sindon' (Sidon). These people were also familiar with fruits like watermelon, melon, coconut, pomegranate, lemon, banana. The main food grains here were wheat and barley.

आर्थिक जीवन

- सैंधव सभ्यता का व्यापार केवल सिंधु क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था अपितु मिन, मेसोपोटामिया औरमध्य एशिया से भी व्यापार होता था।
- सैंधव सभ्यता के प्रमुख बंदरगाह- लोथल, रंगपुर, सुरकोटदा,प्रभासपाटन आदि थे।
- हड़प्पा सभ्यता में माप की दशमलव प्रणाली तथा माप-तौल की इकाई 16 के गुणक में होती थीं।

- The trade of Indus civilization was not limited only to the Indus region, but trade was also done with Min, Mesopotamia and Central Asia.
- The major ports of the Indus civilization were- Lothal, Rangpur, Surkotada, Prabhaspatan etc.
- In the Harappan civilization, the decimal system of measurement and the unit of measure were in multiples of 16.

unacademy

आर्थिक जीवन

- सैंधव सभ्यता की उन्नति का प्रमुख कारण उन्नत कृषि तथा व्यापार था।
- अतः इस काल की अर्थव्यवस्था ही सिंचित कृषि अधिशेष, पशुपालन, विभिन्न दस्तकारियों में दक्षता और समृद्ध आंतरिक और विदेश व्यापार पर आधारित थी।

- The main reason for the progress of the Indus civilization was advanced agriculture and trade.
- Therefore, the economy of this period was based on irrigated agricultural surplus, animal husbandry, proficiency in various handicrafts and prosperous internal and foreign trade.

unacademy

राजनीतिक जीवन

- हंटर के अनुसार, "मोहनजोदड़ो का शासन राजतंत्रात्मक न होकरजनतंत्रात्मक था।"
- व्हीलर के अनुसार, "सिंधु सभ्यता के लोगों का शासन मध्यवर्गीय जनतंत्रात्मक शासन था और उसमें धर्म की महत्ता थी।"

- According to Hunter, "The rule of Mohenjodaro was democratic rather than monarchical."
- According to Wheeler, "The rule of the people of the Indus Civilization was middle-class democratic rule and religion was important in it."

राजनीतिक जीवन

- हड़प्पाइयों के राजनीतिक संगठन का कोई स्पष्ट आभास नहीं है। चूँकि, हड़प्पावासी वाणिज्य-व्यापार की ओर अधिक आकर्षित थे, इसलिये ऐसा माना जाता है कि शासन व्यवस्था में भी वणिक अथवा व्यापारी वर्ग की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी।

- There is no clear indication of the political organization of the Harappans. Since the Harappans were more attracted towards commerce, it is believed that the role of merchant or merchant class was also important in the governance system.

सामाजिक जीवन

- सैंधव सभ्यता के लोग युद्धप्रिय कम, शांतिप्रिय ज्यादा थे।
- श्रमिकों की स्थिति का आकलन कर व्हीलर ने दास प्रथा को स्वीकार किया है।

- The people of Indus civilization were less war-loving, more peace-loving.
- After assessing the condition of the workers, Wheeler accepted slavery.

unacademy

सामाजिक जीवन

- अंत्येष्टि में पूर्ण समाधीकरण सर्वाधिक प्रचलित था, जबकि आंशिकसमाधीकरण एवं दाह संस्कार का भी चलन था।
- यहाँ के लोग गणित, धातु निर्माण, माप-तौल प्रणाली, ग्रह-नक्षत्र,मौसम विज्ञान इत्यादि की जानकारी रखते थे।

- Full burial was most prevalent in funerals, while partial burial and cremation were also practiced.
- The people here used to have knowledge of mathematics, metal making, measurement-weight system, planet-constellation, meteorology, etc.

सामाजिक जीवन

- चन्हूदड़ो से लिपस्टिक के साक्ष्य मिले हैं।
- सिंधु सभ्यता के लोग सूती व ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्रों का प्रयोगकरते थे।
- इस सभ्यता के लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजनकरते थे।
- यहाँ के लोग मनोरंजन के लिये चौपड़ और पासा खेलते थे।

- Evidence of lipstick has been found from Chanhudaro.
- The people of Indus civilization used both cotton and woolen clothes.
- The people of this civilization used to eat both vegetarian and non-vegetarian food.
- The people here used to play dice and dice for entertainment.

unacademy

सामाजिक जीवन

- समाज में विद्वान (पुरोहित), योद्धा, व्यापारी और श्रमिक वर्ग की मौजूदगी थी। आवासों की संरचना समाज की आर्थिक विषमता को दर्शाती है।
- हड़प्पावासी साज-सज्जा पर विशेष ध्यान देते थे। स्त्री एवं पुरुष दोनोंआभूषण धारण करते थे। यहाँ से प्रसाधन मंजूषा मिली है।

- There was presence of scholars (priests), warriors, merchants and working class in the society. The structure of houses reflects the economic inequality of the society.
- The Harappans paid special attention to decoration. Both men and women used to wear ornaments. The toiletry box has been found from here.

unacademy

सामाजिक जीवन

- सिंधु घाटी से प्राप्त अवशेषों के आधार पर उस काल के सामाजिक जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है। समाज की इकाई परंपरागत तौर पर परिवार थी।
- मातृदेवी की पूजा तथा मुहरों पर अंकित चित्र से यह पता चलता है कि हड़प्पा समाज संभवतः मातृसत्तात्मक था।

- The social life of that period can be estimated on the basis of the remains found from the Indus Valley. The unit of society was traditionally the family.
- The worship of Mother Goddess and the images inscribed on the seals suggest that the Harappan society was probably matriarchal.

unacademy

हड़प्पाई लिपि

- इसकी लिपि पिक्टोग्राफ अर्थात् चित्रात्मक थी जो दाई ओर से बाई ओरलिखी जाती थी। इस पद्धति को बूस्ट्रोफेडन (Boustrophedon) कहा गया है। सबसे ज्यादा चित्र 'U' आकार तथा 'मछली' के प्राप्त हुए हैं।

- Its script was pictograph i.e. pictographic which was written from right to left. This method is called Boustrophedon. Most of the pictures have been received of 'U' shape and 'Fish'.

हड़प्पाई लिपि

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

- The years old Indus Valley Civilization was an anonymous civilization till the second decade of the twentieth century i.e. people were unfamiliar with this civilization.
- Scholars believed that there was no civilization in India before Alexander's invasion (326 BC).

स्थल	नदियों के नाम	उत्खनन का वर्ष	उत्खननकर्ता	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी (1926–27 से 1933–34 तक माधोस्वरूप वत्स के निर्देशन में)	पाकिस्तान का मोंटगोमरी जिला
मोहनजोदड़ो	सिंधु	1922	राखालदास बनर्जी	सिंध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
चन्हूदड़ो	सिंधु	1935	अर्नेस्ट मैके	सिंध प्रांत (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला
कोटदीजी	सिंधु	1955 एवं 1957	फजल अहमद खाँ	पाकिस्तान का सिंध प्रांत
रंगपुर	भादर	1954	एस.आर. राव	गुजरात का अहमदाबाद जिला
रोपड़	सतलज	1953 से 56 तक	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ जिला
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	एस.आर. राव	गुजरात का अहमदाबाद जिला
आलमगीरपुर	हिण्डन	1958	खोज-यज्ञ दत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला
सुत्कागेंडोर	दाश्क	1927	खोज-ऑरिल स्टेइन	पाकिस्तान के मकरान में समुद्रतट के किनारे
बनावली	सरस्वती	1973–74	आर.एस. बिष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला
धौलावीरा		1967–68	खोज-जे.पी. जोशी	गुजरात का कच्छ जिला
		1990–91	आर.एस. बिष्ट	

सैंधव स्थलों से प्राप्त अवशेष एवं वस्तुएँ	
स्थल	प्राप्त अवशेष एवं वस्तुएँ
हड़प्पा	कब्रिस्तान आर-37, शवाधान पेटिका, शंख का बना बैल, पीतल की इक्का गाड़ी, स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा (उर्वरता की देवी), गेहूँ व जौ के दाने, अन्नागार, स्वास्तिक एवं चक्र के साक्ष्य, तांबे का पैमाना इत्यादि।
मोहनजोदड़ो	वृहद् स्नानागार, मातृदेवी की मूर्ति, काँसे की नर्तकी की मूर्ति, राज मुद्रांक, मुद्रा पर अंकित पशुपति नाथ की मूर्ति, सूती कपड़ा, हाथी का कपाल खंड, घोड़े के दाँत एवं गीली मिट्टी के दीये के साक्ष्य, गले हुए तांबे के ढेर, सीपी की बनी हुई पटरी, कुंभकारों के 6 'भट्टों के अवशेष', तथा मिट्टी का तराजू, सबसे बड़ी ईंट का साक्ष्य आदि।
चन्हूदड़ो	अलंकृत हाथी, वक्राकार ईंटें, कंघा, लिपस्टिक, चार पहियों वाली गाड़ी, अलंकृत हाथी, मनके इत्यादि।
कालीबंगा	आयताकार 7 अग्नि वेदिकाएँ, जुते हुए खेत के साक्ष्य, काँच व मिट्टी की चूड़ियाँ, सिलबट्टा, सूती कपड़े की छाप, माणिक्य एवं मिट्टी के मनके, बेलनाकार मुहरें, मिट्टी के खिलौने तथा प्रतीकात्मक समाधियाँ आदि।
लोथल	बंदरगाह, धान (चावल) और बाजरे का साक्ष्य, फारस की मुहर, तीन युगल समाधियाँ, धान की भूसी, मनका उद्योग के साक्ष्य, तांबे का कुत्ता, छोटा दिशा मापक यंत्र इत्यादि।
सुरकोटदा	घोड़े की अस्थियाँ एवं एक विशेष प्रकार का कब्रगाह आदि।
बनावली	हल की आकृति वाले मिट्टी के खिलौने, जौ, तांबे के बाणाग्र आदि।

धौलावीरा

- नगर तीन भागों में विभाजित था- दुर्गाभाग, मध्यम नगर तथा निचला नगर।
- धौलावीरा से हड़प्पा सभ्यता का एकमात्र स्टेडियम (खेल का मैदान) मिला है।

- The city was divided into three parts – Durgabhaga, Madhyam Nagar and Lower Nagar.
- The only stadium (playground) of Harappan civilization has been found from Dholavira.

धौलावीरा

- यह गुजरात के कच्छ जिले के भचाऊ तालुका में स्थित है। इसकी खोज1967 ई. में जे.पी.जोशी ने की थी।
- यहाँ से प्राप्त होने वाली सिंधु लिपि के 10 बड़े चिह्नों से निर्मित शिलालेख महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। धौलावीरा के निवासी जल संरक्षण की तकनीक से परिचित थे।

- It is located in Bhachau taluka of Kutch district of Gujarat. It was discovered by JP Joshi in 1967 AD.
- The inscriptions made from 10 big signs of the Indus script to be received from here are an important achievement. The residents of Dholavira were familiar with the techniques of water conservation.

बनावली

- हरियाणा के फतेहाबाद जिले में स्थित इस पुरास्थल की खोज 1973ई. में आर.एस. बिष्ट ने की थी।
- इस स्थल से कालीबंगा की तरह हड़प्पा-पूर्व और हड़प्पाकालीन दोनों संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ जल निकास प्रणाली का अभाव था।
- यहाँ से मिट्टी का बना हल मिला है।
- बनावली से अधिक मात्रा में जौ मिला है।

was discovered in 1973 AD. In RS Bisht did it.

- Like Kalibanga, the remains of both pre-Harappan and Harappan cultures have been found from this site.
- There was a lack of drainage system here.
- A plow made of clay has been found from here.
- Barley has been found in excess quantity from Banawali.

unacademy

कालीबंगा

- यहाँ से जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है।
- यहाँ के भवनों का निर्माण कच्ची ईटों द्वारा हुआ था; यहाँ से अलंकृतईटों के साक्ष्य भी मिले हैं।
- कालीबंगा में शवों के अंत्येष्टि संस्कार हेतु तीन विधियों- पूर्णसमाधीकरण, आशिक समाधीकरण एवं दाह-संस्कार के प्रमाण मिले हैं।

- Evidence of plowing field has been found from here.
- The buildings here were made of mud bricks; Evidence of ornate bricks has also been found from here.
- Evidence of three methods for cremation of dead bodies - full samadhikaran, partial samadhikaran and cremation have been found in Kalibanga.

unacademy

कालीबंगा

- यह राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के बायें तट पर है।कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ 'काले रंग की चूड़ियाँ' हैं।
- इसकी खोज 1951 में अमलानंद घोष द्वारा की गई तथा 1961 ई. मेंबी.बी. लाल और बी.के. थापर के निर्देशन में व्यापक खुदाई की गई।

- It is on the left bank of the Ghaggar River in the Ganganagar district of Rajasthan. The literal meaning of Kalibanga is 'Bangles of Black Color'.
- It was discovered in 1951 by Amalanand Ghosh and in 1961 AD by B.B. Lal and B.K. Extensive excavations were carried out under Thapar's direction.

unacademy

राखीगढ़ी

- हरियाणा के हिसार जिले में स्थित प्रमुख पुरातात्विक स्थल।
- यहाँ से अन्नागार एवं रक्षा प्राचीर के साक्ष्य मिले हैं।
- मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे एशिया के दस ऐसे 'विरासत-स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का खतरा है।

- Major archaeological site located in Hisar district of Haryana.
- Evidence of granaries and defense ramparts have been found from here.
- In May 2012, the 'Global Heritage Fund' included it in the list of ten such 'heritage sites' in Asia that are at risk of destruction.

unacademy

लोथल

- यह गुजरात के अहमदाबाद जिले के सरगवाला ग्राम के समीप दक्षिणमें भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज सर्वप्रथम डॉ. एस.आर. राव ने 1955 ई. में की थी।
- यह स्थल एक प्रमुख बंदरगाह था, जो पश्चिमी एशिया से व्यापारका प्रमुख स्थल था।
- लोथल में नगर को दो भागों में न बाँटकर एक ही रक्षा प्राचीर से पूरे नगर को दुर्गीकृत किया गया था।

- It is situated on the bank of river Bhogwa in the south near Sargwala village of Ahmedabad district of Gujarat. It was first discovered by Dr. S.R. Rao did it in 1955 AD.
- This site was a major port, which was a major place of trade with West Asia.
- In Lothal, the whole city was fortified with a single defense wall instead of dividing the city into two parts.

unacademy

चन्हूदड़ो

- चन्हूदड़ो में किसी दुर्ग का अस्तित्व नहीं मिला है। चन्हूदड़ो सेपूर्वोत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति (झूकर-झाँगर) के अवशेष मिले हैं।
- ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक औद्योगिक केंद्र था जहाँ मणिकारी,मुहर बनाने, भार-माप के बटखरे बनाने का काम होता था। अर्नेस्ट मैकेने यहाँ से मनका बनाने का कारखाना तथा भट्टी की खोज की है।

- No fort has been found in Chanhudaro. Remnants of North East Harappan culture (Jhukar-Jhangar) have been found from Chanhudaro.
- It appears that it was an industrial center where the work of manikari, seal-making, weight-measures and weighing scales was done. Ernest McKayne discovered a bead factory and furnace from here.

unacademy

चन्हूदड़ो

- यह सैंधव नगर मोहनजोदड़ो से 130 किमी. दक्षिण-पूर्व सिंध प्रांत(पाकिस्तान) में स्थित है। इसकी सर्वप्रथम खोज 1934 ई. में एन.गोपाल मजूमदार ने की थी तथा 1935 ई. में अर्नेस्ट मैके द्वारायहाँ उत्खनन करवाया गया।
- चन्हूदड़ो एकमात्र पुरास्थल है, जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।

- It is 130 km from Saindhav Nagar Mohenjodaro. Located in southeast Sindh province (Pakistan). It was first discovered in 1934 AD by N. Gopal Majumdar and excavated here by Ernest Mackay in 1935 AD.
- Chanhudaro is the only site from where curved bricks have been found.

unacademy

मोहनजोदड़ो

- वृहद् स्नानागार, मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल है। इसके केंद्रीय खुले प्रांगण के बीच जलकुंड या जलाशय बना है।
- तांबे तथा टिन को मिलाकर हड़प्पावासी काँसे का निर्माण करते थे। मोहनजोदड़ो से काँसे की एक नर्तकी की मूर्ति पायी गई है, जो द्रवीमोम विधि (Lost wax method) से बनी है।

- The Great Bath is the most important public place of Mohenjodaro. There is a water tank or reservoir in the middle of its central open courtyard.
- The Harappans made bronze by mixing copper and tin. A bronze dancer's idol has been found from Mohenjodaro, which is made by the Lost wax method.

unacademy

मोहनजोदड़ो

- इसका सिंधी भाषा में अर्थ 'मृतकों का टीला' होता है। यह सिंध(पाकिस्तान) के लरकाना जिले में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।
- सर्वप्रथम इसकी खोज राखालदास बनर्जी ने 1922 ई. में की थी।मोहनजोदड़ो की शासन व्यवस्था राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक थी।

- It means 'mound of the dead' in Sindhi language. It is situated on the banks of the Indus river in the Larkana district of Sindh (Pakistan).
- It was first discovered by Rakhaldas Banerjee in 1922 AD. The governance system of Mohenjodaro was democratic rather than monarchical.

unacademy

हड़प्पा

- उन्होंने हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को 'एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानी' कहा था।
- नगर की रक्षा के लिये पश्चिम की ओर एक दुर्ग का निर्माण किया गया था। यह दुर्ग उत्तर से दक्षिण की ओर 415 मीटर लंबा तथा पूर्व से पश्चिम की ओर 195 मीटर चौड़ा है। जिस टीले पर यह दुर्ग बना है उसे व्हीलर ने 'माउंड ए-बी' (Mound A-B) की संज्ञाप्रदान की है।

- He called Harappa and Mohenjodaro the 'twin capitals of a vast empire'.
- A fort was built on the west side to protect the city. This fort is 415 meters long from north to south and 195 meters wide from east to west. Wheeler has given the name of 'Mound A-B' to the mound on which this fort is built.

हड़प्पा

- सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों की खोज सर्वप्रथम 1921 ई. मेंहड़प्पा में की गई। हड़प्पा वर्तमान में रावी नदी के बायें तट पर पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मोंटगोमरी जिले में स्थित है।
- स्टुअर्ट पिग्गट ने इसे 'अर्द्ध-औद्योगिक नगर' कहा है। यहाँ के निवासियों का एक बड़ा भाग व्यापार, तकनीकी उत्पाद और धर्म के कार्यों में संलग्न था।

- The remains of the Indus Valley Civilization were first discovered in 1921 AD in Harappa. Harappa is currently located in Montgomery district of Punjab province of Pakistan on the left bank of Ravi river.
- Stuart Piggett has called it a 'semi-industrial city'. A large part of the inhabitants here were engaged in trade, technical products and religious activities.

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल

- सिंधु घाटी सभ्यता के कुछ प्रमुख स्थल निम्नलिखित हैं :-

- Some of the major sites of the Indus Valley Civilization are as follows:-

unacademy

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- इसके दरवाज़े एवं खिड़कियाँ मुख्य सड़कों की ओर खुलती थीं। यद्यपि मकान बनाने में कई प्रकार की ईंटों का प्रयोग होता था, जिसमें 4:2:1 (लंबाई, चौड़ाई तथा मोटाई का अनुपात) के आकार की ईंटें ज़्यादा प्रचलित थी।

- Its doors and windows opened towards the main roads. Although many types of bricks were used in building houses, the size of 4:2:1 (ratio of length, width and thickness) was more prevalent.

unacademy

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार सैंधव सभ्यता का अद्भुत निर्माणहै, जबकि अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।
- घरों के दरवाजे एवं खिड़कियाँ मुख्य सड़क पर न खुलकर गलियों लमें खुलती थीं, लेकिन लोथल इसका अपवाद है।

- The Great Bath of Mohenjodaro is a wonderful construction of the Indus Civilization, while the Annagar is the largest building of the Indus Civilization.
- The doors and windows of the houses did not open openly on the main road in the streets, but Lothal is an exception.

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- आमतौर पर प्रत्येक घर में एक आंगन, एक रसोईघर तथा एक स्नानागार होता था। अधिकांश घरों में कुओं के अवशेष भी मिले हैं।
- बड़े-बड़े भवन हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो की विशेषता बतलाते हैं।हड़प्पाकालीन नगरों के चारों ओर प्राचीर बनाकर किलेबंदी की गईथी, जिसका उद्देश्य नगर को चोर, लुटेरों एवं पशु दस्युओं से बचाना था।

- Usually each house had a courtyard, a kitchen and a bathroom. The remains of wells have also been found in most of the houses.
- Large buildings tell the specialty of Harappa and Mohenjodaro. Harappan cities were fortified by making ramparts, whose purpose was to protect the city from thieves, robbers and cattle bandits. विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- सड़कों के किनारे की नालियाँ ऊपर से ढकी होती थीं। घरों का गंदापानी इन्हीं नालियों से होता हुआ नगर की मुख्य नाली में गिरता था।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा कालीबंगा की नगर योजना लगभग एकसमानथी। कालीबंगा व रंगपुर को छोड़कर सभी में पकी हुई ईटों का प्रयोग हुआ है।

- The drains along the roads were covered from above. The dirty water of the houses used to fall into the main drain of the city through these drains.
- The town plans of Harappa, Mohenjodaro and Kalibanga were almost identical. Baked bricks have been used in all except Kalibanga and Rangpur.

unacademy

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- प्रथम भाग में ऊँचे दुर्ग निर्मित थे। इनमें शासक वर्ग निवास करता था।
- दूसरे भाग में नगर या आवास क्षेत्र के साक्ष्य मिले हैं, जो अपेक्षाकृत बड़े थे। आमतौर पर यहाँ सामान्य नागरिक, व्यापारी,शिल्पकार, कारीगर और श्रमिक रहते थे।

- High forts were built in the first part. The ruling class resided in them.
- In the second part there is evidence of towns or housing areas, which were relatively large. Commonly citizens, merchants, craftsmen, artisans and laborers lived here.

सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना

- सिंधु घाटी सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी, जिसका ज्ञान इसके पुरातात्त्विक अवशेषों तथा अनुसंधानों से होता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता थी-
- पर्यावरण के अनुकूल इसका अद्भुत नगर नियोजन तथा जल निकास प्रणाली।
- सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। लगभग सभी नगर दो भागों में विभक्त थे :-

- The Indus Valley Civilization was an urban civilization, whose knowledge comes from its archaeological remains and research. Its biggest feature was-
- Its wonderful town planning and drainage system which is eco-friendly.
- The roads cut each other at right angles. Almost all the cities were divided into two parts:-

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- इनके परीक्षण से यह निर्धारित हुआ है कि सिंधु सभ्यता में चार प्रजातियाँ निवास करती थीं- भूमध्यसागरीय,प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड, अल्पाइन तथा मंगोलॉयड।
- सबसे ज्यादा भूमध्यसागरीय प्रजाति के लोग थे।

- From their examination it has been determined that four species lived in the Indus Civilization – Mediterranean, Proto-Australoid, Alpine and Mongoloid.
- Most were people of the Mediterranean race.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- यह सभ्यता 400-500 वर्षों तक विद्यमान रही तथा 2200 ई.पू. से 2000 ई.पू. के मध्य तक यह अपनी परिपक्व अवस्था में थी। नवीनशोध के अनुसार यह सभ्यता लगभग 8,000 साल पुरानी है।
- सिंधु घाटी सभ्यता के निर्माताओं के निर्धारण का महत्त्वपूर्ण स्रोत का उत्खनन से प्राप्त मानव कंकाल है। सबसे अधिक कंकाल मोहनजोदड़ोसे प्राप्त हुए हैं।

- This civilization existed for 400-500 years and dates back to 2200 BC. to 2000 BC By the middle of the year it was in its mature stage. According to new research, this civilization is about 8,000 years old.
- An important source of determination of the builders of the Indus Valley Civilization is the excavated human skeleton. Most of the skeletons have been found from Mohenjodaro.

unacademy

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- सर जॉन मार्शल के दिशानिर्देश में ही राखालदास बनर्जी द्वारा सिंधुघाटी सभ्यता के स्थल मोहनजोदड़ो की खोज 1922 में की गई।
- रेडियो कार्बन-14(C4) जैसी नवीन विश्लेषण पद्धति के द्वारा हड़प्पा सभ्यता का काल निर्धारण 2500 ई.पू. से 1750 ई.पू. माना गया है।

- Mohenjodaro, the site of the Indus Valley Civilization, was discovered in 1922 by Rakhaldas Banerjee under the guidance of Sir John Marshall.
- The Harappan civilization was dated 2500 BC by a new analysis method like Radio Carbon-14(C4). to 1750 BC It is assumed.

unacademy

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- उसके बाद वर्ष 1921 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में पुरातत्त्वविद् दयाराम साहनी ने उत्खनन कर इसके प्रमुख नगर 'हड़प्पा' का पता लगाया।
- सर्वप्रथम हड़प्पा स्थल की खोज के कारण इसका नाम'हड़प्पा सभ्यता' रखा गया।

- After that in the year 1921, under the leadership of Sir John Marshall, the then Chairman of the Archaeological Survey of India, the archaeologist Dayaram Sahni excavated and discovered its main city 'Harappa'.
- Due to the discovery of the first Harappan site, it was named 'Harappan Civilization'.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- सिंधु घाटी सभ्यता अपने त्रिभुजाकार स्वरूप में थी जिसका क्षेत्रफललगभग 13 लाख वर्ग किमी. है।
- सर्वप्रथम चार्ल्स मैसन ने 1826 ई. में सैंधव सभ्यता का पता लगाया,जिसका सर्वप्रथम वर्णन उनके द्वारा 1842 में प्रकाशित पुस्तक में मिलता है।

- The Indus Valley Civilization was in its triangular form, whose area is about 13 lakh square km. Is.
- For the first time, Charles Mason traced the Indus civilization in 1826 AD, the first description of which is found in the book published by him in 1842.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- सैंधव सभ्यता का भौगोलिक विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू) से लेकरदक्षिण में नर्मदा नदी के मुहाने तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक था।
- वह उत्तर से दक्षिण लगभग 1100 किमी. तक तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 1600 किमी. तक फैली हुई थी। अभी तक उत्खनन तथाअनुसंधान द्वारा करीब 2800 स्थल ज्ञात किये गए हैं।

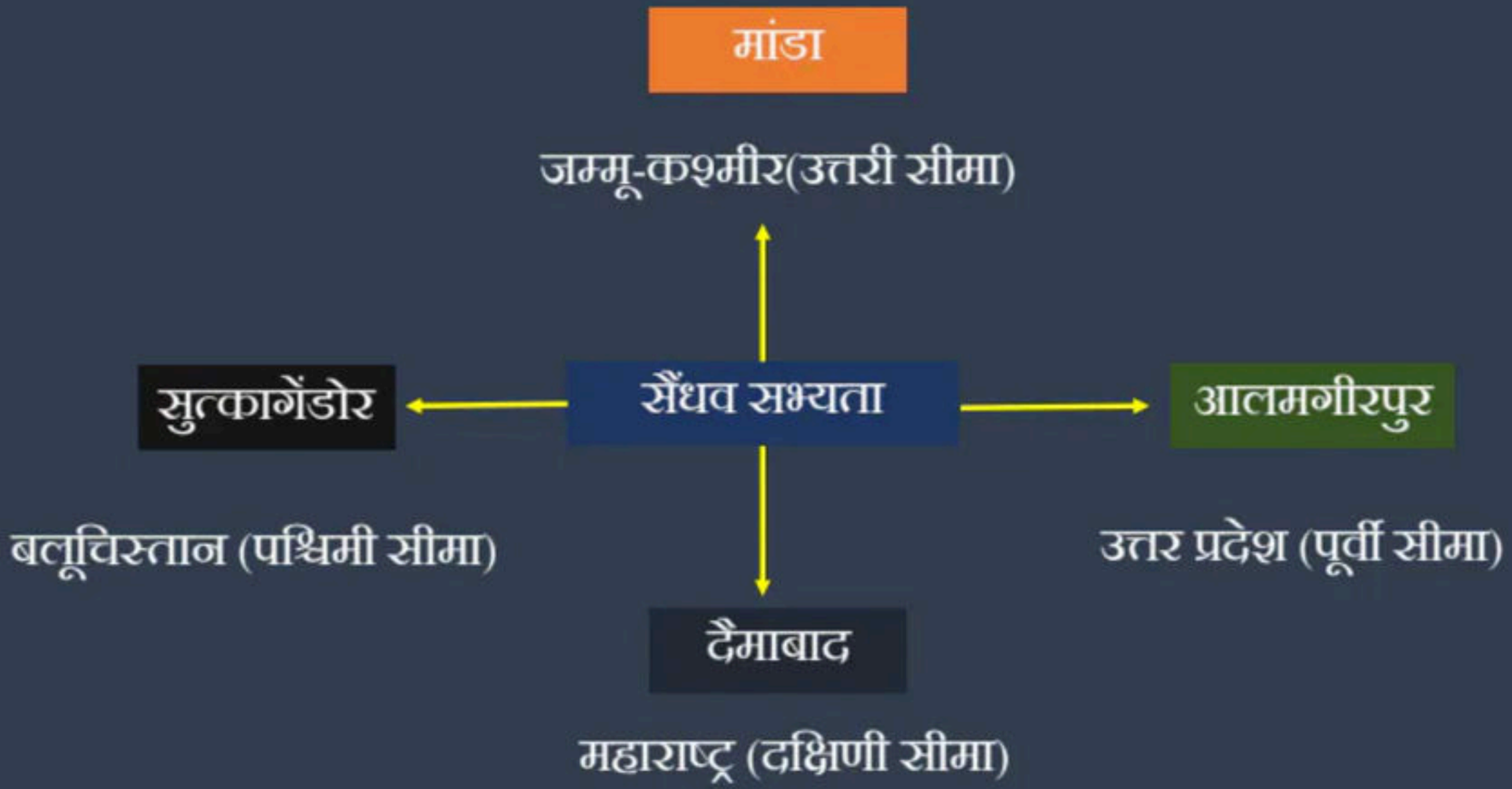
- The geographical extent of the Indus civilization was from Manda (Jammu) in the north to the mouth of the Narmada river in the south and from Sutkagendor in the west to Alamgirpur (Meerut) in the east.
- It is about 1100 km from north to south. and from east to west about 1600 km. was extended. So far, about 2800 sites have been known by excavation and research.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

- सिंधु घाटी सभ्यता कांस्ययुगीन सभ्यता थी, जिसका उद्भव ताम्रपाषाण काल में भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ था और इसका विस्तार भारत के अलावा पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ क्षेत्रों में भी था।

- The Indus Valley Civilization was a Bronze Age civilization, which originated in the western region of India in the Chalcolithic period and spread to some areas of Pakistan and Afghanistan apart from India.

सिंधु घाटी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार



नामकरण

- अत: इतिहासकार, इस सभ्यता का प्रमुख केंद्र हड़प्पा होने के कारण इस सभ्यता को 'हड़प्पा की सभ्यता' नाम देना उचित मानते हैं।

- Therefore, historians consider it appropriate to name this civilization 'Harappan Civilization' due to Harappa being the main center of this civilization.

unacademy

नामकरण

- सिंधु घाटी सभ्यता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक था। आरंभ में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से इस सभ्यता के प्रमाण मिले हैं अत: विद्वानों ने इसे सिंधु घाटी सभ्यता का नाम दिया, क्योंकि ये क्षेत्र सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में आते हैं, पर बाद में रोपड़, लोथल, कालीबंगा, बनावली, रंगपुर आदि क्षेत्रों में भी इस सभ्यता के अवशेष मिले जो सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र से बाहर थे।

- The area of the Indus Valley Civilization was very wide. Initially, the evidence of this civilization has been found from the excavations of Harappa and Mohenjodaro, so scholars named it Indus Valley Civilization, because these areas come in the area of Indus and its tributaries, but later Ropar, Lothal, Kalibanga, Banawali Remains of this civilization were also found in areas like Rangpur, etc. which were outside the area of Indus and its tributaries.

भूमिका

- कालांतर में सर जॉन मार्शल, माधव स्वरूप वत्स, के.एन. दीक्षित, अर्नेस्ट मैके, ऑरिल स्टेइन, अमलानंद घोष, जे. पी. जोशी आदि विद्वानों ने उत्खनन करके महत्त्वपूर्ण सामग्रियाँ प्राप्त की।
- उत्खनन से प्राप्त अवशेषों के आधार पर इस पूरी सभ्यता को 'सिंधु घाटी सभ्यता', अथवा इसके मुख्य स्थल हड़प्पा के नाम पर 'हड़प्पा सभ्यता' कहा जाता है।

- Later on Sir John Marshall, Madhav Swaroop Vats, K.N. Dixit, Ernest McKay, Aurel Stein, Amalanand Ghosh, J. Scholars like P. Joshi excavated and obtained important materials.
- On the basis of the remains found from the excavation, this entire civilization is called 'Indus Valley Civilization', or 'Harappan Civilization' after its main site Harappa.

भूमिका

- बीसवीं सदी के तृतीय दशक में दो पुरातत्वशास्त्रियों-दयाराम साहनी तथा राखालदास बनर्जी ने हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो के प्राचीन स्थलों से पुरावस्तुएँ प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि सिकंदर के आक्रमण के पूर्व भी एक सभ्यता थी, जो अपने समकालीन सभ्यताओं में सबसे विकसित थी।

- In the third decade of the twentieth century, two archaeologists, Dayaram Sahni and Rakhaldas Banerjee, obtained antiquities from the ancient sites of Harappa and Mohenjodaro, proved that even before the invasion of Alexander, there was a civilization, which was the most developed among its contemporary civilizations.

भूमिका

- वर्षों पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता बीसवीं सदी के द्वितीय दशक तक एक गुमनाम सभ्यता थी अर्थात् लोग इस सभ्यता के बारे में अपरिचित थे।
- विद्वानों की धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नहीं थी।

- The years old Indus Valley Civilization was an anonymous civilization till the second decade of the twentieth century i.e. people were unfamiliar with this civilization.
- Scholars believed that there was no civilization in India before Alexander's invasion (326 BC).

सिंधु घाटी सभ्यता

(Indus Valley Civilization)



unacademy

